‘अ’
का मानव जीवन में महत्व

कल्पना नारायण बारापात्रे

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Kalpana Narayan Barapatre 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-107-8

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: April 2026

Udise No. - 27100711121
P.T. - 37
School Index No. - 03.05.004
Junior College - 03.05.008

कार्यालय

वैनगंगा विद्यालय तथा कनिष्ठ महाविद्यालय, पवनी

ता. पवनी जि. भंडारा ४४१९१० फोन (०७१८५) २५५८६६

जावक क्रमांक

शुभेच्छा संदेश

सौ. कल्पना नारायणराव बारापात्रे, सहाय्यक शिक्षिका, वैनगंगा विद्यालय पवनी, इनके द्वारा कडी मेहनत से लिखी किताब 'अ' का मानव जीवन मे महत्व नामक किताब के माध्यम से मानव जीवन मे 'अ' का कितना महत्व है, ये बताने का प्रयत्न किया गया है। इस किताब के माध्यम से समाज मे जागरूकता लाने का प्रयत्न शिक्षिका (लेखिका)ने किया है। उनके कार्य को सफलता प्राप्त हो तथा जनसमूदाय उनके विचारोको समझेंगे ऐसी शुभकामना प्रकट करता हू।

दिनांक :०१/०१/२०२६
ठिकाण : पवनी

वैनगंगा शिक्षण संस्था, पवनी
स्थापना
1952-53
F-19(B)
ता.पवनी,जि.भंडारा

अध्यक्ष
वैनगंगा शिक्षण संस्था,
पवनी

साहित्य समाज का दर्पण होता है

कल्पना नारायण बारापात्रे

‘अ’ का मानव जीवन मे महत्व

सौ. कल्पना नारायण बारापात्रे (धकाते)

मो. ९५४५८९३०२७

|| श्री ||

साहित्य समाज का दर्पण होता है ।

‘अ’ का मानव जिवन में महत्व

मेरी पाँचवी पुस्तक ‘अ’ का मानव जिवन मे महत्व आपके सामने प्रस्तुत कर रही है। यह पुस्तक लिखने के पहले मैने

१) नारियों की जिवन गाथा

२) शुन्य

३) शिक्षणशास्त्र

४) प्यार

यह पुस्तके थोडसी लिखने के बाद मुझे ‘अ’ का मानव जिवन मे महत्व लिखने की अभिलाषा निर्माण होने पर मैने ‘अ’ काा मानव जिवन में महत्व लिखना शुरू किया है । इस पुस्तक मे मुझे कितनी सफलता मिलेगी यह मेरे विचार आप लोगों को कितने प्रमाण में समझ गये होंगे । इसके उपर निर्भर है। यदि मुझे मेरे विचार प्रगट करते समय इस किताब में मुझसे कोई गलती या कमी रह गई होगी तो कृपा करके क्षमा करे।

धन्यवाद !

सौ. कल्पना बारापात्रे (धकाते)

‘अ’ यह वर्णमाला का पहला अक्षर जिस तरह से वर्णमाला के संपूर्ण अक्षर ‘अ’ वर्ण के बिना अधुरा है । उसी तरह से मानव जिवन में भी ‘अ’ का अत्यंत महत्व है । ऐसे बहोत से शब्द है। जो ‘अ’ वर्ण लगाने पर अर्थ शब्द है। जो ‘अ’ वर्ण लगाने पर अर्थ ही बदल जाता है। जिससे मानव जिवन परिवर्तित होता है।

१) सत्य X असत्य

मानव जिवन में सत्य का अत्यंत महत्व है। हमारा जिवन पृथ्वी पर है। यह सत्य है । सूर्य हमें रोशनी देता है। यह भी सत्य है जो हमारी आँखों से दिखाई देता है। वह भी सत्य है। सत्य के रूप अनेक है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जैसे हमे हवा यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनो रूप में प्राप्त होती है। हम दोनो ही रूप में हवा के दर्शन कर लेते है। हवा जब शांत होती है। त बवह अप्रत्यक्ष रूप से हमारे साथ होती है। लेकिन हवा जब अशांत हो जाती है तब उसका अस्तित्व हम पहचाना जाता है। हम मानव प्रति पल सत्य को पहचानते आए है। हमे सत्य पहचानने की शक्ती भी है। प्राकृतिक वस्तुए हो याा मानव निर्मीत वस्तुए हो सभी सत्य है। लेकिन प्राकृतिक वस्तुओं मे असत्यता तनिक भी झलकी नही है। लेकिन अप्राकृतिक वस्तुओं में असत्यता स्पष्ट झलक जाती है। जैसे मानव प्राकृतिक संसाधन पर प्रक्रिया करके नयी वस्तु बनाता है। उसी तरह से नयी वस्तु में अपनी सुविधाके अनुसार फायदा भी देखता है। कम से कम श्रम पैसे मे वह वस्तु होना चाहिए। इसके लिए वह असत्य मार्ग भी अपना लेता है। जैसे कपास सत्य है। लेकिन उसपर प्रक्रीया करके कपास के धागे में इसके कृत्रिम धागों का मिश्रण करके वह कपडा कपास का सुती कपड़ा करके मानव बेचता है। ऐसी स्थिती में वह सत्य के साथ-साथ असत्य का भी साहारा लेता है। सत्य में ‘अ’ वर्ण लिखने से ही उसका अर्थ ही नही बदला । बल्की संपूर्ण मानव

जिवन ही बदल जाता है। जो व्यक्ती सत्य की राह पर चलता है उसके जिवन में अनेक कठिनाइयो के बावजुद सफलता ही सफलता होती है। उसे अनेक बार परिक्षा देनी पडती है। लेकिन उसका जिवन का आनंद एक सुगंधित पुष्प के समान होता है। जिसकी सुगंध लेने के लिए सभी आतुर होते है। जो व्यक्ती असत्य वादी जिवन जगनता है उसका जिवन कम कठिनाइयों से होता है। उसको किसी भी प्रकार की परिक्षा नही देनी पडती। लेकिन असत्य व्यक्ती यह ज्यादा दिन तक टिक नहि पाता। उसका असत्य जल्दी से सामने आ जाता है। वह अपने जिवन को इस तरह से फँसा देता है की वह वहाँ से बाहर निकलना भी चाहे तो निल नही पाता। मानव के सामने दो रास्ते होते है। एक सत्य तो दुसरा असत्य यह सत्य और असत्य दिन और रात के समान होते है। सत्य याने दिन जिसमें उजाला जिसको कोई छिपा नहि सकता । क्यों की यह उजाला उस सूर्य सत्य का ही होता है । दुसरा मार्ग असत्य को जो रात के समान होता है। जिसमें अँधेरा ही अँधेरा । लेकिन इस अँधेर मे चंद्रमा और तारे यह अपना प्रकाश बिघरने की कोशिश करते है। लेकिन उतना प्रकाश नही फैला पाते। जितना सुर्य का प्रकाश होता है। अतः यह अँधेरा उजाला के सामने हार जाता है। याने सत्यवादी व्यक्ती के सामने असत्य वादी व्यक्ती हार जाता है। मानव कितनी भीचालाकी क्यों ना करे। लेकिन सत्य असत्य का फैसला यह उसके कार्य से छलकता है। हम एक नजर अंदाज करके भी नही चुक सकते। जो व्यक्ती असत्यवादी होते है उन्हे सत्यवादी व्यक्ती पसंत नही

आते। वे व्यक्ती असत्यवादी के द्वारा सत्यवादी व्यक्ती पर अत्याचार करने की कोशिश करते रहते है। लेकिन सत्यवादी व्यक्ती यह कितनी भी कठिनाइया आने पर भी वह सत्य का ही साथ देकर अपना और समाज का विकास करते जाता है। यह विश्व जो कायम है । उसमें सत्य है। अभी भी सत्यता कायम है। इसलिए समाज के लोग स्वतंत्र अपना व्यवसाय करके अपने उदर-निर्वाह कर रहे है। नही तो लोगो को अपने घर से बहार निकालना मुश्किल हो जाता। असत्य का परदा कितना भी गहरा होने प रवह परदे में कोई दम नही होता। वह जल्दी ही निकल जाता है। मानव जिवन यह सत्य जिवन है। इस जिवन में असत्य का पदार्पण होने पर मानव का जिवन कष्टदायक पूर्ण बेकार हो जाता है। हम मानव होने के नाते हमे सत्य का ही साथ देना है। जो हमारे जिवन में महत्वपूर्ण है। असत्य का साथ ना देकर उसे रोकना है। तभी हमारा मानव जिवन सफल हो सकता है। अन्यथा हमारे जिवन का कोई अर्थ नही रहता। एक पशु के भांती हमारी मृत्यु होकर हम काल के ग्रास बन जायेंगे। तथा पृथ्वी में अपनी कुछ छाप छोड़े बिना ही मिट जायेंगे। यदि हमस सत्य का साथ देते है तो हमारे कार्य मानवों के लिए यादगार बनती है। जो हमारा शरिर मिट्टी में मिलने पर भी वह कार्य के रूप में जिवित रहता है। सत्य से हमे दुर नही जाना है। उसे अपने जीवन में अपनाना है। हमारे अंदर लाल रक्त है। यह सत्य है। हमारी आत्मा अमर है। यह भी सत्य है। हमारा शरिर नाशवान है। यह भी सत्य है। इसलिए इस देह का घमंड नही करना चाहिए। असत्य यह

ऐसा काला परदा है जिसके अपनाने पर हमारे जिवन में अंधेरे के अलावा कुछ भी नजर नही आयेगा। सत्वादी व्यक्ती और असत्यवादी व्यक्ती का जिवन देखो। आप लोगों की राय देखोगे तो लोग सत्यवादी लोगों के जिवन के समान जिवन जिना पसंद करेंगे। असत्यवादी के समान नही। मानव के जिवन में सत्य यह कितना महत्वपूर्ण है। हम जानकर भी अनजान बनते है। लेकिन हमे अनजान न बरकर सत्य-असत्य यह अंतर जान लेना चाहिए। अपना जिवन यह महत्वपूर्ण है। इस को ध्यान में रखना चाहिए।

२) स्विकार X अस्विकार

हमारे मानव जीवन मे स्वीकार-अस्वीाकर का कितना महत्व है । यह आप लोग भी अच्छी तरह से जानते है। यदी कोई बात हमारी अच्छी तरह से जानते है। कोई बात हमारी स्वीकार हो जाती है। तो हमे आनंद होता है। यदी वही बात अस्वीाकर होती है तो हमे दु:ख होता है। मेरी दो राय है। वह राय मेरी अभी तक स्वीकार नही हुयी है। पहली राय १) गेंदो का फुलो का प्रकल्प २) प्लास्टिक निर्मुलन प्रकल्प । स्वीकार करने की कोशिश कि थी लेकिन मुझे उसमे स्वीकार के जगह अस्वीकारिता प्राप्त हुयी है। समाचार पत्र मे भी यह प्रकल्प लिखकर भेजने पर समाचार पत्र वालों ने भी यह प्रकल्प छापने से इंकार कर दिया। आजतक मैने अपनी स्वयम लिखित कविताए कितने तो भी लोगों को छपाने

के लिए दिये है। तथा समाचार पत्र मे भी भेजने पर कही से भी स्वीकार यह शब्द नही आया। अस्विकारिता ही हाथ मे अभी तक लगी है। मैने अपने मन की बात को स्वीकार-अस्विकार में इसलिए आपके सामने रखा है। की कोई भी हमारी बातों को स्वीकार करे या अस्वीकार करे हमे दु:खी न होकर अपने कर्तव्य करते जाना है। साई के श्रद्ध और सबुरी के अनुसार अपनी अस्वीकार बात को स्वीकार करने की कोशिश करना चाहिए।

१) गेंदो का फुलो का प्रकल्प

साई के चरनों मे प्रत्येक दिन कितने तो भी गेंदों के फुलो का हार भक्त जनो द्वारा चढाया जाता है। यदि उन्ही हार पडे हम सडाने की अपेक्षा सुखाकर बरसात के दिनों में थोडी-थोडी सी खाली जमिन खोंदकर डाल तेते है। तो एक गोंदे के फुल से कितने पौधे निकल सकते है। जिससे हमारे गंगा नदि का पानी गंदा भी नही होगा। हमारे जानवरों को चारा भी मिल जायेगा। तथा फुलों के कारण पृथ्वी माता सुंदर भी दिखेगी। पृथ्वी माता का वातावरण पूर्णत: फुलों से भरा हुआ दिखायी देगा।

२) प्लास्टिक निर्मलन प्रकल्प

प्लास्टिक में इसिलिए जो आज हमारी आवश्यकता बन गयी है। आज इस झिल्लियों को चाहते हुये भी हम अलग नही कर सकते। आज प्रत्येक सामान खाने से लेकर अनेक प्रकार के

झिल्लीयों में पॅकिंग हो रहे है। जिससे वातावरण मे दिनो दिन उचित उपयोग नही किया तो संपूर्ण पृथ्वी में यह झिल्लीयां बहोत ही गंभीर समस्याए निर्माण कर लेगी जिससे पृथ्वी का तापमान बढ रहा है। तथा जनावर खाने से जनावरों के स्वास्थ पर बुरा असर हो रहा है। जिससे वातावरण में विविध प्रकार के किटाणु फैल रहे है। विभन्न प्रकार की बिमारिया हो रही है। यदि सरकार इस और थोडासा ध्यान देती है तो क्योटो प्रोटोकॉल संधी के अंतर्गत प्लास्टिक निर्मुलन प्रकल्प अपनाकर संपूर्ण वातावरण शुद्ध कर सकती है। इसके लिए सरकार का अपने आय की कुछ अंशत राशी पर्यावरण क्षेत्र के अंतर्गत खर्च करके प्लास्टिक याने झिल्लीया जो मानव ने उपयोग करके वातावरण में फेंक दि है उसे अंशतः राशी में खरिदना चाहिए जिससे देखे के जरूयरत मंद लोग यह झिल्लीया वातारण से जमा करके सरकार को बेचकर पैसे प्राप्त कर सकती है। सरकार ने प्रत्येक गांव के बाहर एक गोदाम बनाकर वहा झिल्लियां को जमा करके अनुउपयोगी झिल्लिया को खाली खदाने या खाई कुआ में डाल देना चाहिए। जिससे खाली गड्डे मे यह झिल्लीया जमा रखने पर उनसे कुछ वर्ष के बाद शयद कुछ नया पदार्थ बन सकता है। जो मानव के उपयोग में हो। यदि सरकार क्योटो प्रोटोकॉल के अंतर्गत पर्यावरण को बचाने के लिए अनेक संधी कर लि है। तो यह एक संधी और जो सरकार स्वीकार करके मानव जिवन में बहार ला सकती है। अस्वीकार करके मानव जिवन में अनेक कठिनाइयां ला रही है। यदि कोई अपनी बात स्वीकार कर लेता है। तो आनंद

होता है। कोई अपनी बात अस्वीकार करलेता है। तो अपमान लगता है। स्वीकार-अस्वीकार मानव जिवन मे कितना महत्वपूर्ण है यह हम कल्पना नही कर सकते। यदि हमें कोई युद्ध के लिए ललकारता है तो उसमें अस्वीकार यह जिवन के लिए लाभकारी है। स्वीकार यह घातक है। मानव जिवन में दोनो भी महत्वपूर्ण है। स्वीकार-अस्वीकार।

३) मूल्यवान X अमुल्यवान

मूल्यवान और अमूल्यवान हमे हमेशा हमारे जिवन में आते रहते है। कभी हमे इसकी पहचान होती है। तो कभी नही। माता का प्यार मूल्यवान है। लेकिन बहोत कम लोग माता का प्यार मूल्यवान समझते है। बड़े होने पर उन्हे वही प्यार अमूल्यवान लगता है। जो माता हमे अपने खून से बड़ा किया आज हमारे पास उसे दूध देने के लिए पैसे नही है। यदि कोई भी वस्तु जब उपयोग में रहती है। तो वह हमे मूल्यवान लगती है। जैसे यह पेन उपयोग में है। तो मूल्यवान है। जब इसकी शाई समाप्त हो जाती है। तो यह पेन अमूल्यवान हो जाता है। हम उसका उपयोग न होने के कारण उसे फेंक देते है। जब तक हमारे में प्राण है। हम मूल्यवान है। जिस दिन हमारे शरिर से यह प्राण निकल जाते है जो हमारा शरिर अमूल्यवान हो जाता है। उसके सड़ने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसलिए व्यक्ती के मृत शरिर जब काम करना छोड देता है तो उसे मिट्टी के अंद दफनाया

जाता है। या उसे जला दिया जाता है। उसी तरह से मानव के जिवन में अनेक वस्तुए मूल्यवान और अमूल्यवान होती है। जो हम अपने उपयोग के अनुसार उसे महत्व देते रहते है।

हमारे शरिर की अपेक्षा आत्मा अत्याधिक मूल्यवान है। लेकिन हम अपने शरिर के अपेक्षा आत्मा को महत्व ज्यादा प्रमाण में देते है। जबकी आत्मा अमर है। शरिर नाशवान है। मुल्यवान- अमुल्यवान की भाषा हम मानव को समझ लेना चाहिए। उसी अनुसार अपना जिवन जिने की ठान लेना चाहिए। समय हमारे लिए अत्याधिक मुल्यवान है। इस मुल्यवानप को इमने अमूल्यवान मानकर बरबाद नही करना चाहिए। यदि हमने अमूल्यवान मानकर समय को बरबाद कर लिया तो समय भी हमे एक दिन बरबाद कर लेगा।

४) पुरा X अधुरा

हमारा जिवन कभी-कभी हमें ऐसा लगता है कि पुरा है। कभी-कभी ऐसा लगता है की अधुरा है। यह जिवन है जिवन में आनेवाला प्रत्येक पल हमें कुछ ना कुछ संदेश दे जाता है। मानव जिस तरह से गर्भ में पलता है जब तक उसके शरिर का संपूर्णतः विकास नही होता। तब तक वह माता के गर्भ से बाहर निकल नही पाता। यदि कोई बच्चा संपूर्णतः विकास होने के पहले ही जन्म हो जाता है। तो वह जिवन उसका समाप्त हो जाता है। ऐसे भी स्थिती में संपूर्णतः विकास न होने पर भी कुछ बच्चे अपना

जिवन समाप्त होने नही देते। अपने अधुरे जिवन को पूर्ण करने की कोशिश करते रहते है। जिस तरह से चंद्रमा थोडा-थोडा प्रकाशीत होते-होते अपने आप को पुरा प्रकाशित कर लेता है। उसी तरह से ही हमारे जिवन मे थोडा-थोडा ज्ञान को प्रकाश निर्माण करते हुये अपने अधुरे जिवन को पुरा करना है। हम जब जन्म लेते है। तो ज्ञान से अभिन्न होते है लेकिन बाद में खाने-पिने के साथ-साथ अपने शारिरिक क्रिया को बढाते-बढाते हम अपने अपुरे जिवन को पुरा करते है।

९) प्रतिकुल X अनुकूल

हमारा जिवन प्रतिकुल-अनुकूल है। हम अपने शरिर को जिस तरह से ढालने की कोशिश करेंगे हमारा जिवन उसी के अनुरूप ढलते जाता है। यदि हमने प्राकृतिक वातावरण में न रहते हुये एयर कंडिशनर की याने ए.सी. की आदत डाल दि तो हमारा जिवन ए.सी. के समान अनुकूल हो जायेगा। लेकिन प्राकृतिक वातावरण के प्रतिकूल हो जायेगा। प्रतिकूल याने विरूद्ध। फिर हमें बाहर निकल कर प्राकृतिक वातावरण मे हम रह नही सकेंगे। क्यों की हमारे शरिर ने वह ए.सी. का वातावरण ग्रहण किया है। अतः उसे प्राकृतिक वातावरण प्रतिकुल लगता है। हमारा जिवन यह अनुकूलता के समान ढालने की कोशिश करना चाहिए। अनुकूलता के अनुसार ही जिवन जिया जाये तो हम बिमारियों से दूर जायेंगे। नही तो हमे अनेक बिमारिया इस तरह से घेर लेगी

की हम उसकी कल्पना भी नही कर सकते। हमारे हाथ में है हमारा जिवन प्रतिकुल हो या अनुकूल। हमारी सोच जैसे होगी हमारा जिवन उसी दिशा में प्रवाहित होते जायेगा।

६) आदि X अनादि

आदि याने शुरूवात का निश्चीत समय या स्थान अनादि याने शुरूवात का अनिश्चीत स्थान या समय हमारा जिवन हर दिन सूर्य के उदय के साथ शुरू होता है। ऐसा कहा जाता है। सूर्य के अस्त के साथ अनादि याने अंत हो जाता है। लेकिन हमसूर्य अस्त होने के बाद भी अपना कार्य शुरू ही रखते है। जब सूर्य का उदय होने के लिए समय रहता है तब भी अपने कार्य की शुरूवात कर लेते है यह हम ने जन्म लिया है तो हमारा आधारा संभाले पृथ्वी है। उपर आसमान है लेकिन हमे अपने आँखों से दिखाई हमेशा पृथ्वी और आसमान एक दुसरे से मिले हुये दिखाई देते है। जिसे हम क्षितीज कहते है। जिसका ना आदि है ना अनादि हम कही पर से भी देखने पर हमे आदि और अनादि दोनो हमारे सामने दिखायी देंगे। इसके उपर मैने एक कविता लिखी है ।

क्षितिज

मैने सोचा,

यह मेरा अस्तित्व ।

कहाँ सक आया है ?

मेरे साथ कौन है ?

पृथ्वी, आकाश और कौन ?

यह क्षितीज।

यह क्षितिज कौन ?

जिसका ना आदि है ना अनादि

यह क्षितिज

मेरे अपनों का क्षितिज।

जिसको छुने की चाह।

हर मानव में,

उड़ते गगन के पक्षी मे,

यह क्षितिज।

जिस तरह से उडते गगन का पंछी क्षितिज को प्राप्त करना चाहता है। उसी तरह से हर मानव की सोच यह क्षितिज को छुने की होती है। लेकिन हर मानव वह क्षितीज प्राप्त नही कर सकता। सबके रास्ते अलग-अलग होते है। कोई मानव कर्म के अनुसार द्वितीज को छुना चाहता है। कोई मानव सत्य के आधार पर तो कोई मानव असत्य का साहारा लेकर क्षितीज को छुना चाहता है।

७) उन्नति X अपनति

उन्नति याने विकास अपनति याने नष्ट करना। जिस तरह से हम इस पृथ्वी पर जिवन जि रहे है। उसमें हमारा विकास हो रहा है। लेकिन हम दुसरो का विकास भी करना है। उनकी अपनति नही। जैसे हम वृक्ष को काँट रहे है। जिससे दिनो-दिन वृक्ष का प्रमाण कम होते जा-रहा है। जिससे वृक्ष की अपनति हो रही है। हमें अपनी उन्नति का खयाल जिस तरह से है। उसी तरह से दुसरों की उन्नति का भी ख्याल होता है। यदि हम दुसरों की उन्नति चाहेंगे तो हमारी भी उन्नति होगी। यदि हम दुसरो की अपनति चाहेगे तो हमारी भी अपनति होगी। हमारे जिवन मे जो बाते हमेशाा सामने आते रहती है। हमे अपनी उन्नति करना है। दुसरों की भी उन्नति ही करना है। अपनति नही। आज प्राकृतिक प्र्यावरण की अपनति का प्रभाव मानव की उन्नति पर पड रहा है। लेकिन मानव को इसकी भनक भी होने पर अनजान बन रहा है। यदि मानव अपनी उन्नति चाहता है। उसी तरह से यदि प्र्यावरण कि उन्नति उसे चाहिए । तो ठोस कदम उठाना पडेगा । जिससे संपूर्ण विश्व में उन्नति ही उन्नति होगी। अपनति मानव जिवन से कोसो दुर चले जायेगी ।

८) संतोष X असंतोष

संतोष यह हमारी मन की भाषा है। उसे हम ही समझ सकते है। असंतोष भी हमारे मन की भाषा है। उसे हम ही समझते है। व्यक्ती बहोद सारा पैसा शोहरत होने पर भी असंतोष होता है। लेकिन इस संसार में ऐसे भी व्यक्ती होते है। जिनके पास पैसा शोहरत कुछ भी ना होने पर भी संतोष होता है। हमारे मन की आवाज के अनुसार हम कार्य करते जाते है। हमे ऐसा लगता है की उसके पास वह वस्तु है तो हमारे पास भी होनी चाहिए। इसलिए असंतोष मन क कारण हम गलत कार्य करते जाते है। जिससे हमे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। यदि हमारा मन संतोष है तो हमें कोई गलत कार्य नही करना पडेगा। आज मानव जिवन में भ्रष्टाचार, हिंसा ने उग्र रूप धारण कर लिया है वह असंतोष का ही फल है। असंतोष मानव का जिवन पूर्णत: बदल देता है। इसलिए हमें हमेशा संतोषपूर्ण जिवन जिकर पैसे के महत्व को जिस तरह से पहचानते है । उसी तरह से समय के महत्व को पहचान कर समय के अनुसार अपने आप को सफलता की राह पर चलने सिखाकर असंतोष को दुर भगाकर संतोष के मार्ग पर चलना चाहिए।

९) शिक्षीत X अशिक्षीत

शिक्षा मानव को प्शु से मनुष्य बनाती है। इसलिए मानव जन्म होने के बाद अपने विकास लिए पाठशाला में जाता है। पाठशाला में उसे शिक्षा से नया ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक नैतिकता का भी ज्ञान दिया जाता है। शिक्षीत का अर्थ है। 'साक्षरता'

।।साक्षरता।।

मानव दृष्टी से,

सक्षरता याने।

पढ़े, लिखे, अक्षरज्ञान।

लेकिन,

मेरी दृष्टी से,

साक्षरता याने।

अक्षरज्ञान के साथ,

व्यवहारीक ज्ञान भी।

व्यवहारीक ज्ञान याने क्या ?

नैतिकता की शिक्षा।

यह नैतिकता क्या?

नैतिकता याने अच्छा आचरण

जो आवश्यकता है?

सभ्यता को बचाने की

संस्कृति को निखारने की

देश को शक्तीशाली बनाने की

विश्व का कल्याण करने की

साक्षर सभी मानव

देश भी साक्षर

विश्व भी साक्षर

यदि हमे शिक्षीत होना है तो हमे सिर्फ अक्षर ज्ञान के साथ ही अच्छा आचरण नैतिकता की शिक्षा भी प्राप्त कर लेना है। शिक्षीत होने से हमे अपना जिवन बदल भी सकते है। लेकिन हम अशिक्षीत रहने पर हमारा जिवन जैसे के वैसा ही रहे जो नाही हमारे लिए अर्थपूर्ण ह ैना ही दुसरों के लिए। जैसे आज संपूर्ण विश्व में एक भयंकर बिमारी ने उग्र रूप धारण कर लिया है। आप सभी जानते है। एड्स की बिमारी जिसमें मानव के जिवन ही नष्ट है। अत: यदि हम नैतिकता का पालन करते है। स्वयम में अपने आप को साक्षर समझते है। तो इस बिमारी से हम दुर रह सकते

है। संपूर्ण विश्व मे यह साक्षरता अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम मानव होने के कारण हमें अक्षर ज्ञान के साथ-साथ बहोत से ऐसे आचरण है। जो हमें अपने आप पर लागु करके । अपने आप को साक्षर बनाकर विश्व को नया संदेश देना है।

१०) धर्म X अधर्म

धर्म-अधर्म यह मानव जिवन में जब से मानव की निर्मीती हुयी है। तभी से चली आ रही है। मानव जिवन ही धर्म-अधर्म के अनुसार चल रहा है। मानव के जिवन में धर्म-अधर्म का प्रभाव पडते रहता है। इस प्रभाव के साथ मानव को जिवन जिते समय मुकाबला करना होता है। कभी-कभी धर्म के मार्ग पर जिवन जिना पडता है। तो कभी अधर्म के मार्ग पर लेकिन धर्म का मार्ग यह अत्यंत सफलता का मार्ग है। अधर्म का मार्ग यह असफलता का मार्ग है। हमारे साधु-संत भी हमें धर्म के मार्ग पर चलने को कहते है। अधर्म नष्ट करने के लिऐ हमें बार-बार प्रवचन देते रहते है। लेकिन हम मानव यह हमारे सामने पैसा कुर्सी का प्रलोभन देखकर कभी-कभी अधर्म का मार्ग भी अपनाा लेते है। धर्म के मार्ग से हमे कुछ मिलने वाला नही है। ऐसा सोच कर जो व्यक्ती धर्म के मार्ग पर चल रहा है उसे द्वोष करते है। तथा अस्थायी सफलता के लिए अधर्म का मार्ग अपना लेते है लेकिन यह अधर्म का मार्ग कुछ ही पल बाद हमारे से दूर जाने लगता है। हमारी सफलता भी उसी तरह से दूर जाने लगती

है। हमारा मन हमे कहता है की वह व्यक्ती धर्म का मार्ग बता रहा है। वह सत्य है। हमारा मन हमारे को बताने के बाद भी हम अपने मन के विरूद्ध जाते है। आप इतिहास मे देखो रामायण, महाभारत में जितने भी युद्ध हुये वे धर्म-अधर्म के बीच मे ही हुये। धर्म के तरफ कम लोग अनेक कठिनाइयां तथा आग-शस्त्र भी कम प्रमाण मे होने पर भी धर्म की ही जित अंत में हुयी है। हम कितनी भी चालाकी कर लेंगे लेकिन अंत में हमे धर्म के आगे झुकना ही पडेगा। अधर्म के आगे ना सिर्फ सही समय की राह होती है।

११) ज्ञान X अज्ञान

ज्ञान-अज्ञान यह हम मानव के जिवन में उजाला-अँधेरा के समान है। यदि हमारे पास ज्ञान है तो हमारा जिवन उजालों से प्रकाशित होगा। यदी हमारे पास ज्ञान है ही नही तो हमारा जिवन अज्ञान के द्वारा अप्रकाशित होगा। हम जब इस संसार में आते है तब हम अज्ञानी होते है। हमे औपचारिक-अनौपचारिक ज्ञान के द्वारा अपने आप मे धिरे-धिरे ज्ञान प्राप्त करना होता है। आप निरीक्षण करके देखो। जो व्यक्ती जितना ज्ञान लालसा होता है उसका जिवन उतना ही प्रकाशमय होता है। हमें अज्ञानी रहना यह हमारे कर्तव्य से प्राप्त होता है। हमे ज्ञानी बनने के लिए अपने सामने आए सभी कर्तव्य को हसते-हसते स्वीकार करके करते जायेंगे तो हम ज्ञान की सिढी पर सिढी चढते जायेंगे। हर कर्तव्य

करते समय हम नया ज्ञान प्राप्त होते जाता है। उस नये ज्ञान को आत्मसात करना हमें अत्यंत आवश्यक होता है। ज्ञान यह प्रकाशमय, अज्ञान यह अंधकारमय यह हमारे उपर निर्भर है। अतः हमे अपना जिवन प्रकाशमय बनाना है या अंधकारमय यह हमे तय करना है जिवन जिते समय।

१२) स्विकृति X अस्विकृति

मानव जिवन में स्विकृति-अस्विकृति अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब हमे कोई बात अच्छी लगती है। जब हमें कोई बात अच्छी लगती है तब उस बात को हम स्विकृति देने मे पल भर का विलंब भी नही करते लेकिन जो बात हमे अस्विकृति लगती है उस बात को हम अस्विकृति देते है। लेकिन यह परिस्थिती हमारे जिवन मे प्रत्येक पल नही होती। कभी-कभी हमारे दृष्टी में अस्विकृत बात को भी किसी कारण वंश स्विकृति देनी पडती है। फिर हम ऐसी परिस्थिती में उसके नतिजें के तरफ नही देखते। कभी कभी हमारे जिवन में ऐसे भी पल आते है जो स्विकृत होने पर भी हम उसे अपने तरफ से स्विकृति नही दे सकते। यह स्विकृति-अस्विकृति हर मानव के जिवन मे हर क्षेत्र में आते हुए पारिवारिक, सामाजिक, कार्यात्मक, धार्मिक, राजनैतिक सभी क्षेत्र में लागु होता है। इस समय मानव को अपने आसपास की परिस्थिती देखकर यह कार्य कैसा है उसे स्विकृति देने से अपना तथा समाज विश्व का कल्याण होने वाला है या नही। कभी-कभी ऐसे प्रसंग

भी आते है की मानव अपने आप को बचाने की लालसा में अस्विकृत बातें को भी स्विकृत कर लेता है। यह मानव की एक तरह की परिक्षा ही होती है। जो हमारे सामने स्विकृत-अस्विकृत अवस्था में हमारी परिक्षा देने के लिए ही आती है। लेकिन हम कभी परिक्षा में सफल तो कभी असफल हो जाते है।

१३) मान X अपमान

मान-अपमान हम मानव के वो आभूषण है इसे पहनना ही होता है। हम चाहे अमिर हो या गरिब, राजा हो या रंक, ज्ञानी हो या अज्ञानी, किसी भी प्रकार का व्यक्ती होने पर हमे मान-अपमान इन दोनो परिस्थितियों से गुजरना ही होता है। कभी-कभी हमारे चारो तरफ के वातावरण में हमे इतना मान मिलता है की हम उस मान की अपेक्षा भी नही कर सकते। लेकिन कभी-कभी हमारी गलतियाँ न होने पर भी हमे अपमान सहन करना पडता है। मान-अपमान यह हमारे जिवन में पल पल आते जाते है। कभी कभी हमारे अपने चाहने वाले भी हमारा मान करने की अपेक्षा अपमान करते है। हमे दुसरे से यह अपेक्षा नही करनी चाहिए की हमें हर पल मान ही मिलेगा। क्योंकी पहले की अपेक्षा अभी की परिस्थिती बदल गयी है। अभी मानव यह उसे दी सम्मान देना चाते है। जिनसे उन्हे काम है। जिनसे कुछ काम न होने पर ये कितने भी बडे अमिर, ज्ञानी कितने भी बडे पद पर होने पर मानव उन्हे मान नही देना चाहते। कभी कभी वे मान के

हकदान तो होते है लेकिन समाज में ऐसा समझा जाता है की हम डनहे मान देगे तो हमारा अपमान हो जायेगा। जिस तरह से हमारे जिवन में दिन-रात के बाद एक एक आते है उसी तरह से हारे जिवन मे मान-अपमान यह भी दिन-रात के समाज आते जाते रहते है। मान होने पर अत्याधिक खुश नही होना चाहिए। अपमान होने पर अत्याधिक दु:खी नही होना चाहिए। हमे दोनो परिस्थितीयों से कुछ ना कुछ सिख लेना चाहिए। मान यह अच्छे कार्य के लिए मिलता है। अपमान यह बुरे कार्य के लिए मिलता है। यह उतना ही सच है लेकिन यह मानविय स्वभाव पर भी निर्भर होता है। मानव का स्वभाव के अनुसार कार्यप्रणाली होती है ।

१४) विष X अमृत

विष याने मृत्यू-अमृत याने जिवन। मानव का जिवन । लेकिन हम मानव को याद होने पर यह विष है । यह अमृत है। लेकिन अपनी लालसा मिटाने के लिए हम विष के पिछे भागते है। अमृत को अपने पास रखने या अपनाने में हमें अच्छा नही लगता। हमारे पृथ्वी पर दुध यह हमारे लिए अमृत के समान भगवान ने भेजा है। शराब यह विष के समान हमारे सामने भगवान ने पेश किया है। दूध पिकर हमे किसी भी प्रकार की बिमारियों का सामना नही करना पडता। बल्की अपनेक बिमारिया अपने आप दूर हो जाती है। लेकिन विष याने शराब पीनें से अनेक बिमारी अपने आप हो जाती है। जिससे हमारा

आयुष्य ही समय से पहले समाप्त हो जाता है। लेकिन हम मानव जानते हुये भी यह गलत कार्य करके अपना जिवन अपने हाथ से स्वयम नष्ट कर देते है। हमें अपने जिवन को नष्ट होने से बचाना है। तो अमृत यह हमारा जिवन है। विष नही । यह बाब को धान में रखकर अपना जिवन जिना चाहिए। विष यह सडे पदार्थ से मानव प्राप्त करलेता है। लेकिन अमृत यह अच्छे पदार्थ माता के द्वारा ही हम मानव को प्राप्त होता है। माता के अलावा हमे अमृत इस पृथ्वी पर नही मिल पाता। लेकिन बहोत कम लोग माता को समझ पाते हैं आज माता याने गोमाता की संख्या दिनो-दिन कम हो रही है। उसी के साथ जिन माताओं से बकरी, भैंस, उँटनी इनकी संख्या दिनो-दिन कम हो रही है । जिससे पृथ्वी से अमृत कम होकर विष की मात्रा बढ रही है। जो हमारे लिए अत्यंत कठिन होते जा रहा है। इसके लिए सरकार को प्रयत्न करने के लिए तथा स्वयम भी अपने प्रयत्न से जितना होता है करना चाहिए।

१५) दृश्य X अदृश्य

हमारे साथ जो वस्तु होती है वह दृश्य रूप में हमारे साथ होती है । लेकिन जो वस्तु हमारे साथ न होकर हमें आँखो से दिखाई नही देती वह वस्तु अदृश्य होती है। हम मानव आँखों से दिखाई देनेवाले वस्तु को दृश्य मानते है जो वस्तु दिखाई नही देती उसे अदृश्य। लेकिन हम मानव ने अनुभव किया है की जो वस्तु

दृश्य रूप मे है वह धिरे-धिरे हमारे से अदृश्य हो जाती है। जो वस्तु अदृश्य है। वह एक दिन दृश्य होकर हमारे साथ रहने लगती है। जैसे हमारे जिवन में आने वाला कल का सूर्य यह हमारे लिए अदृश्य है। लेकिन कल का जब दिन आता है तो वह सूर्य हमे दृश्य रात में हमारे सामने आने लगता है। संपूर्ण बाराह घंटे हमारे साथ रहकर धिरे-धिरे हमारे से अदृश्य होते जाता है। फिर एक बार हानेवाला दृश्य रूप का सूर्य अदृश्य होने पर फिर हमे कभी भी दृश्य रात में उस दिन के साथ हमारे जिवन में नही आता है। यदि हमने इस दृश्य सूर्य का सही उपयोग नही कर सके। उस बाराह घंटे का सही उपयोग न करके हमने उसे ऐसे ही छोड दिया तो हम अपने आप के लिए जिवन मे कुछ नही कर सकते। हमारे जिवन मे दृश्य और अदृश्य रूप कितना महत्वपूर्ण है यह आप जान सकते है। इसके बिना मानव का जिवन अधुरा है। आज हमारे साथ रहने वाली हर वस्तु वह चाहे सजिव हो या निर्जिव हमें दृश्य रूप में प्राप्त होने पर हमारे साथ कुछ पल रहने के बाद एक ना एक दिन वह हमारे से ओझल होते जाती है। याने अदृश्य हो जाती है। जो वस्तु हमारे से ओझल हो जाती है वह वस्तु हमारे जिवन में फिर से दृश्य रात कदम नही रख पाती। हमने अपने जिवन में जो वस्तु चाहे सजीव हो या निर्जिव दृश्य रूप में होने पर उसका उपयोग ले लेना ही अपनी सफलता स्वयम अपने हाथों से निर्माण करना है। हमें इसके लिए ईश्वर से बार-बार सूचना भी चंद्रमा, सूर्य के द्वारा दि जाती है। जिस तरह से हमारे से ओझल चंद्रमा धिरे-धिरे हमारे सामने प्रकाशित रूप में हमारे साथ हो

जाता है अपना प्रकाश का धिरे-धिरे बढोत्तरी करके पूर्ण प्रकाशित चंद्रमा यह हमारे साथ एक दिन पूर्णतः दृश्य रूप में हमारा साथ देता है फिर से उसके प्रकाशित भाग में कभी या अदृश्य होते जाता है। यह जो क्रम दृश्य-अदृश्य का है वह हमारे मानव के जिवन का एक हिस्सा है। हम मानव जब जन्म नही लेनेवाले थे तब इस पृथ्वी पर हम अदृश्य रूप मे थे। फिर हमारे जन्म के बाद हम इस पृथ्वी में दृश्य रूप में अपना जिवन व्यापन करने लगते है। लेकिन हमारा जिवन क्रम जितना होता है उसके बाद हमें इस पृथ्वी से अदृश्य होना पडता है। हमारी आत्मा अदृश्य होने के बाद धिरे-ध्णिरे हमारा शरिर भी पंचतत्व मे लिन होकर अदृश्य हो ही जाता है।

१६) विनाश X अविनाश

विनाश याने खत्म करना। अविनाश चाने उसका विनाश होने से बचाना है। जब हमारे से कोई विनाश याने गलत कार्य हमारे जिवन में हो रहा है तो उस विनाश को रोक कर हम उसे अविनाश में परिवर्तीत कर सकते है। यदि हमारे से कोई मानव के द्वेष के कारण कोई गलती उस मानव के जिवन के लिए हो रही है तो हम उस गलतियों को दुरूस्त कर सकते है। हमारा जिवन इस पृथ्वी पर दुआ है। तो वह अविनाश करने के लिए । विनाश के लिए नही ।हम मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके उनका विनाश कर लिया है। वृक्षों की कमतरता, ऑक्सीजन की

कमी, शुद्ध पानी की कमी हम मानव के प्राकृतिक विनाश का कारण है। जिससे हमे दिनो-दिन कितनी बिमारियों का सामना करना पडता है। यह हम ही जान सकते है इसके लिए हमे अपने जिवन को बचाने तथा दुसरों के जिवन को भी बचाने के लिए कुछ तो भी करना चाहिए। जिससे हमारे विनशपूर्ण जिवन का रूपांतरण अविनाश पूर्ण जिवन मे परिवर्तीत हो सकता है।

१७) पराजीत X अपराजीत

पराजित माने हार जाना। अपराजित याने जित जाना। हम मानव का जिवन पराजित - अपराजित दोनो के चक्र पर चलते रहता है। कभी पराजय का हमें सामना करना पडता है तो कभी अपराजय का साथ हमारे सामने होता है। हमारा जिवन में जिस तरह से दिन-रात आते जाते है। उसी तरह से पराजित-अपराजित हमारे जिवन मे दिन-रात के समान आते जाते है। हमे ऐसा लगता है की हम दुसरों को पराजित करके हम अपने आप को अपराजित कर लेंगे। लेकिन यह बात गलत है। यदि हम अपनी अपराजित चाहते है तो हमारे में यह ध्येय होना आवश्यक है की हम भी दुसरों की अपराजीत ही देखने के लिए उत्सुक रहे। हम अपने जिवन में पराजित होना नही चाहते तो हमे दुसरो के जिवन मे पराजित का बिज बोना अच्छा नही है। हमे यदि जिवन में अपराजित होना है तो हमे पराजित बहोत बार सामना करना पडेगा। बार बार हम उस कार्य में पराजित होने के

बाद अपराजित हो जायेंगे। जैसे गणित के शिक्षक हमे पहले जोडना बताते है। जोडना यह हमारे लिए नया शब्द होने के कारण हम बार बार कोशिश करते जाते है। लेकिन असफल होते जाते है। लेकिन एक दिन हम जोडने की क्रिया में इतने अपराजित हो जाते है की कोई भी संख्या का जोडना कितनी भी बडी संख्या होने पर उसको जोडना हमे बहोत ही आसान सा लगता है। हमे ऐसा लगता है की हम अपने पराजित में अपराजित को लाने में सफल हो गये है। हमारा जिवन पराजित से अपराजित होते समय उसमें धिरे-धिरे परिवर्तन होते जाता है। यह परिवर्तन हमारे जिवन में एक नया मोड लेकर आता है। जो सभी के भलाई का होता है।

१८) खंड X अखंड

खंड याने किसी वस्तु के टुकडे-टुकडे होना । अखंड याने वह वस्तु जिसके एक भी टुकडे नही हुये है। ऐसी अखंड वस्तु । जैसे हम मानव ने संपूर्ण पृथ्वी के अपनी सुविधा के अनुसार खंड मे विभाजित कर लिया है। लेकिन हम पृथ्वी के समान आकाश को खंड में विभाजित नही कर सके। आकाश हमारे मानव के लिए अखंडित है। अत: हमारे जिवन में खंड-अखंड का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिस तरह से हमे खंड का कभी कभी अपयोग करना पडता है। उसी तरह से अखंड का भी उपयोग हमे करना होता है जैसे मानव जिवन में अनेक बाते होती है। जिनका

खंड में भी विभाजन नही किया जाता है। अखंड में भी विभाजन किया जाता है। चाहे वो रोटी यह पूर्णतः गोल होती है। उस पुर्ण रोटी को हम अकेले ही संपूर्ण खा जाते है। नही तो उसी रोटी को खंडों में विभाजीत कर जितने खाने वाले होते है उतने खंडाों में विभाजन किया जा सकता है। खंड - अखंड यह प्राकृतिक बाते भगवान पर निर्भर है। लेकिन भौतिक बाते यह मानवों पर निर्भर होती है। मानव का भौतिक बातों में बहोत सी वस्तुओं का विभाजित करके अपनी दिनचर्या चला सकता है। अनेक अखंड मिलाकर एक खंड को बना सकते है। जैसे की फुलों की पंकुडीया हो जाने प रवह फुल अखंडीत हो जाता है।

१९) लौकीक X अलौकीक

लौकिक याने अत्यंत प्रकाशमय जिसके प्रकाश की कोई सिमा नही है। अलौकिक याने जिसमें प्रकाश ही नही है। ऐसा मानव जिवन यह लौकिक इसलिए है क्यों की इसमें प्रकाशमय आत्मा है। यह प्रकाशमय आत्मा मानव के जिवन को लौकिक करती है। यदी वही व्यक्ती कार्य अच्छे से करता है, सभी की भलाई उसके कार्य में होती है तो उसका जिवन लौकिक होता है। साथ ही दुसरों का जिवन भी लौकिक होता है। लेकिन जो मानव अपने शरिर में प्रकाशमय आत्मा होने के बावजुद वह दुसरों की भलाई के लिए कार्य नही करता । उसे दुसरों की भलाई अच्छी नही लगती वह व्यक्ती दुसरोंके जिवन में जिस तरह से अंधकार

चाहता है उसी तरह सेउसके जिवन में भी अंधकार याने अलौकिक होता है। यह मानव के जिवन की पहचान होती है। हमारा जिवन यदी प्रकाशमय होना चाहते है तो हमे दुसरों का भी जिवन प्रकाशमय होना अत्यंत आवश्यक है। हम लौकिक-अलौकिक जिवन को समझ लेना चाहिए। तथा अपने जिवन का ध्येय निश्चीत करना चाहिए। कि उसे क्या करना है। लौकिक या अलौकिक के तरफ जाना है। यह उसका ध्येय होता है तो मानव का जिवन उस पर निर्भर होता है।

५०) समझ X असमझ

समझ यह हमारे बुद्धी की उपज होती है। असमझ यह भी हमारे बुद्धी की उपज होती है । एक व्यक्ती में समझ - असमझ दोनो बाते अपने बुद्धी मे आ जाती है। एक ही मानव में जिवन मे ऐसे पल जाते है । जिसमें समझ होती वही मानव कभी कभी असमझ से भी कार्य कर लेता है। उसे ऐसा लगता है की समझ-असमझ हमारे जिवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है। हमारे बुद्धी में कोई बातें समझ में आ जाती है। वह बात अच्छी भी होती है बुरी भी हो सकती है। कभी कभी आगे वाला व्यक्ती अपनी बुद्धी के अनुसार वह अपने सामने वह बात रखता है। वह बात हमारे सामने ऐसे रखता है की उसे भी मालूम होता है की यह बात गलत है। तो कभी वह हमारी बुद्धीमता देखने उस बात को अपने समझ में लाने की कोशिश करते जाता है। हम उस बात को

असमझ होने पर भी हम समझ लेते है। उसी के अनुसार व्यवहार करते है। कभी कभी हमारे सामने अनेक ऐसे प्रसंग भी आते जाते है। हमारे समझ में जो बाते है वे बाते दुसरों को असमझ भी हो सकती है। हमारी समझ के अनुसार ही दुसरे व्यक्ती समझ की बाते करे यह आवश्यक नही है। बहोत से लोग अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए अपने से कनिष्ठ व्यक्ती पर अत्याचार करने की कोशिश करते रहते है। उसे ऐसा लगता है की उस पर अत्याचार करने से उसकी श्रेष्ठता बढ जायेगी। लेकिन उसकी श्रेष्ठता बढनने के बजाय घटती है। यह उसके असमझ का परिणाम है। हमे थोडीसी सफलता मिल जाने पर हम इतना आनंदित क्यो होते है। सफलता के भी उस पार असफलता है। यह हम भूल जाते है। हमें ऐसा लगने लगता है की हम जो कुछ भी कार्य कर रहे है उसके पिछे हमारा ही उद्देश्य सफल होने वाला है। हमे दुसरों के उद्देश्य से क्या ? लेकिन हमारे सभी कार्य का लेखा-जोखा रखा जाता है। हमारे मन में ईश्वर की किताब में हम दुसरों से समझ - असमझ में जो कार्य करते है। उसके पिछे हमारा जिवन जुडा होता है। उसके साथ ही दुसरो का भी जिवन जुडा होता है। हमे ऐसा लगता है की यह मानव जिवन अत्यंत मुल्यवान है । तो अपने जिवन मे समझ-असमझ को परिस्थिति के अनुसार स्थान देना स्वीकार कर लो ।

२०) समानता X असमानता

हमारे मानव जिवन मे समानता-असमानता का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे जिवन में इतने पल आते जाते है जिसमें हमे समान-असमान का सामना करना पडता है। कभी हमारे सामने समानता का व्यवहार होता है। तो कभी असमानता का व्यवहार होता है। जिस तरह से समुद्र के पानी में ज्यार-भांटा की निर्मिती होते रहती है। उसी तरह से हमारे जिवन में समानता- असमानता की भी निर्मिती होते रहती है। कभी कभी हम उस कार्य के लिए सर्वगुण संपन्न होने के बाद भी वह कार्य नही लि पाता । लेकिन हमारे से कमजोर व्यक्ती को वह कार्य मिल जाता है। यह असमानता हमारे जिवन में अनेक बार आ जाती है। कभी कभी ईश्वर भी हमारी परिक्षा देखने के लिए हमारे से कमजोर व्यक्ती को हमारे से ज्यादा प्रमाण में सफलता दे जाता है। वह हमारी परिक्षा होती है। जैसे राम यह राजगद्दी पर बैठने के बजाय ईश्वर की निती ने भरत को राज्य दे दिया। लेकिन भरत यह अपने भाई का आदर्श मानकर राजगद्दी पर नही बैठा। लेकिन चौदाह वर्ष तक राज्य शासन चलाया। उसे यह भगवान के दैवी कृपा से ही हुआ। लेकिन रामजी के भाग्य में वनवास आने के बाद भी उन्होने उसे हँसते-हँसते स्वीकार कर लिया। उन्हे मालूम था की व्यक्ती को महान बनने के लिए सिर्फ कुर्सी ही आवश्यक नही व्यक्ती जंगल में भी रहकर अपने कर्तव्य से महान बन सकता है। व्यक्ती को कर्तव्य पूर्ण करने के लिए किसी सम्मान

की आवश्यकता नही होती है। हमारी शासन व्यवस्था में समानता का तत्व अपनाया है। लेकिन शासन व्यवस्था में भी कभी-कभी असमानता आ जाती है। असमानता यह हमारे जिवन में प्रति पल निर्माण भी होती है। हमें महसुस भी होती है। कभी कभी हमारा जिवन उस असमानता में खो जाता है। जिससे हमारे जिवन का रास्ता भडकने की संभावना रहती है। लेकिन हमें अपना धैर्य न खोते हुये अपने पर हुये इस असमानता को धैर्य पुर्वक रहते हुये अपन विकास का मार्ग खोजना चाहिए। जिस तरह से बहते पानी को एक दिशा से बहने से रोक लिया जाता है तो पानी अपने बहने की दिशा दुसरी तरफ से प्रगति पथ पर चलने की कोशिश करना चाहिए। हमारे पास अनगिनत ज्ञान है उस ज्ञान का उपयोग हमने करना चाहिए। यदि मानव ने हमारे साथ असमानता का व्यवहार किया है लेकिन भगवान के पास असमानता नही है। भगवान के घर में देर होती है। अंधेर नही। हमारे जिवन के सभी बातों का लेखा-जोखा हमारा भगवान करता है । इसलिए हमारे जिवन में समानता - असमानता क्या है यह हमने अच्छी तरह से जान लेना चाहिए।

२१) साधारण X असाधारण

साधारण-असाधारण हमारे जिवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम साधारण मानव है। लेकिन हम कुछ ऐसे कार्य करते है जिससे हम असाधारण मानव कहलाये जाते है। जैसे अन्ना हजारे

एक साधारण परिवार का मानव है। उनकी दिनचर्या सामान्य होने पर उन्होने अपने जिवन को दुसरे के लिवन के लिए सुख में ढालने का निश्चय कर लिया। उन्होने भ्रष्टाचार को समाप्त करने का संकल्प करर लिया। यह उनका असाधारण याने जिस कार्य की कोई तुलना नही हो सकती वह कार्य सूर्य के समान प्रकाशित है। ऐसे कार्य उसे हम असाधरण कार्य कहते है। साधारण कार्य सभी मानव कर ही लेते है। उनके जिवन व्यापन के लिए उन्हे साधारण कार्य करना ही पडता है। लेकिन असाधारण कार्य बहोत ही कम लोग कर सकते है। ऐसे कार्य करते समय मानव के जिवन में अनेक कठिनाइयां आती है। जिसे मानव को हंसते हंसते स्वीकार करना होता है। बहोत से मानव में असाधारण कार्य करने की क्षमता होने पर भी वे साधारण कार्य करना ही पसंत कर लेते है। क्यों की उन्हे मालूम होता है। की इतनी कठिनाईयां आने पर उसका जिवन दुःखमय हो सकता है। दुःख के घबराहट से वे स्वयंम को अपने आप में परिवर्तन करके असाधारण कार्य करके ही स्वीकार कर लेते है। मानव जिवन में कितना महत्व है। साधारण-असाधारण का । जो इसकी भाषा समझ लेता है वही इसके अनुसार अपने जिवन पुर्ण दिनचर्या बना लेता है। हमे अपने आप को साधारण रूप में रखकर असाधारण कार्य की और आगे बढाना चाहिएं हमारे काय्र असाधारण होना चाहिए। लेकिन हमारा रहन सहन यह साधारण रूप का होना चाहिए। इसमें कुछ विशेष चमक-धमक नही होनी चाहिए। चमक यह होनी चाहिए वह हमारे कार्य में मानव जाना जाता है। वह अपने कार्य के द्वारा

उसके कार्य के कारण उसकी चमक होती है। यदि वह अपने शरिर को चमकिला बनाता है तथाा उसके कार्य साधारण है तो उसका शरिर का असाधाणपण कोई महत्व नही रखता। मानव का ध्येय शरिर की अपेक्षा अपने कार्य को असाधारण बनाने में होना चाहिए। वही मानव जिवन सफल जिवन कहलाता है।

२२) प्रामाणिक X अप्रामाणिक

मानव जिवन मे प्रामाणिक-अप्रामाणिक यह महत्वपूर्ण घटक है। हमारा जिवन दो पहलु पर खडा है। एक प्रामाणिक तो दुसरा अप्रामाणिक। कभी-कभी हमें प्रामाणिकता का जिवन जिना होता है तो कभी अप्रामणिकता का जिवन जिना होता है। हम प्रामाणिक होने के बावजुद हमें अप्रामाणिकता के कार्य अपने जिवन में कभी करने पडते है। न चाहते हुये भी अप्रामाणिकता का कार्य करने को मजबुर हो जाते है। लेकिन हमने यह देखना है की अप्रामाणिकता में दुसरो की भलाई या बुराई । यदि हमने जो अप्रामाणिकता कार्य किया है। जिससे दुसरो की भलाई वह कार्य मानव जिवन के लिए कल्याणकारी कार्य है। लेकिन हमने अप्रामाणिकता का किया है । उसमें दुसरों की बुराई है तो वह मानव जिवन के लिए हमारे लिऐ दु:खदायी कार्य है। हमे अपने सोच के अनुसार जान लेना चाहिए। की कौनसा कार्य प्रामाणिक कौनसा कार्य अप्रामाणिक है। यही हम संपूर्णत: अपने आप को प्रामाणिक समझ लेते है तो हम जिवन भी अधुरा रह जाता है। इस

संसार में प्रामाणिकता की भी सिमा है। हर जगह प्रामाणिकता यह हमारे जिवन के लिऐ लाभकारी नही है। कभी कभी हमारी प्रामाणिकता हमारे लिए हानीकारक भी हो सकती है। हमे समय के अनुसार अपने आप में बदलाव लाना भी आवश्यक है। जिस तरह से सूर्य के रोशनी के अनुसार समय यह तिन रूपों में हमे सामने आता है। सबेरे, दोपहर, शाम । सबेरे समय हमारे जिवन में अलग ही रोशनी फैलाता है। यही रोशनी दोपहर के समय अलग रहती है। शाम के समय अलग। उसी तरह से हमारे जिवन मे प्रामाणिक अप्रामाणिकता का स्थान होना अत्यंत आवश्यक है। मानव जीवन का सत्य है जो अप्रामाणिक होते है उनमें दिखावे की भावना अधिक होती है। इस दिखावे की भावना से वे अपने आप को प्रामाणिक बनाने की नकली कोशिश करते जाते है। जो प्रामाणिक व्याप्ती होता है। उनपर अत्याचार करने की कोशिश तो करते ही है। अपने व्यवहार से उसकी प्रामाणिकता पर अप्रामाणिकता का काला कपडा ढकने की कोशिश करते जाते है।

२२) परिपक्व X अपरिपक्व

परिपक्व याने संपूर्ण रूप से तैयार अपरिपक्व याने कुछ गुणों की कमी । इस संसार में फल यह वृक्ष पर लगने के बाद वह जब तक परिपक्व नही हो जाता । तब त कवह वृक्ष से गिरता नही है। फल यह नये बिज का निर्माण कर लेता है। वह बिज जब ही नये वृक्ष को जन्म दे सकता है। ज बवह उस फल का परिपक्व

बिज हो। मानव जीवन भी एक फल के समान है। मानव के बुद्धी का शरिर का जब तक संपूर्ण रूप से विकास नही हो जाता तब त कवह मानव इस संसार में अपना विकास नही कर सकता। यदि मानव का मानसिक विकास ठिक तरह से हो रहा है । लेकिन शारिरिक विकास उतने प्रमाण मे नही हो रहा है। तो यह मानव के मानसिक विकास का कुछ लाभ नहि। जैसे एक लडका पढलिखकर डॉक्टर बन गया। लेकिन उसने पढाई में ही ध्यान देता रहा। वह अपने शरिर के तरफ ध्यान न देने के कारण उसके शरिर मे अनेक बिमारियों से उसे गुजरना पडा। याने उसकी शारिरिक क्षमता कमजोर होने के कारण उसने जो ज्ञान प्राप्त किया था वह ज्ञान वह आत्मसात कर सका। लेकिन उसका उपयोजन नही कर सका। हमे परिपक्व होने पर ही नया कार्य मिलने की चाहत होनी चाहिए। यदि हम गाडी चलाने के नियम आत्मसात नही कर लेते। हम गाडी ठिक तरह से नही चला सकते। याने इस अपरिपक्वता के कारण हमारी मृत्यू भी हो सकती है। क्या जब माता के गर्भ मे पुर्णतः परिपक्व नही हो जाता। उसका जन्म नही होता उसका जन्म हो भी जाए लेकिन उसका जीवन समाप्त हो जाता है। अतः बच्चे को जन्म देने के लिए परिपक्व होना अत्यंत आवश्यक है। हमारे मानव जिवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है। यह हम बता सकते है परिपक्व - अपरिपक्व उतना ही महत्वपूर्ण है। जितना हमारा जिवन है। उतना ही महत्वपूर्ण है। अतः हमे परिपक्व - अपरिपक्वता के तरफ ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। जब तक वृक्ष यह परिपक्व नही

हो जाता । तब तक उस वृक्ष को फुल और फल भी नही लग सकते। मानव यह एक वृक्ष है। यह ध्यान में रखकर ही अपना जिवन जिना चाहिए। यदि अपरिपक्व वृक्ष मे समय से पहले फल लग भी जाते है तो उसमें उतनी मिठास नही होती। जितनी परिपक्वता वृक्ष के फल में होती है उसी तरह से मानव जिवन भी है।

२४) संतुलन X असंतुलन

संतुलन-असंतुलन का मानव जिवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मानव जीवन कभी संतुलित रहता है। तो कभी असंतुलित हो जाता है। जिस तरह से प्र्यावरण के सभी घटक मानव के जिवन में महत्वपूर्ण है। इन घटको का मानव के जिवन मे उतार-चढाव आते-जाते रहते है। जैसे हम मानव को हवा की आवश्यकता होती है। हवा हमें सभी दिन प्रतिबल प्राप्त होती है। सामान्य रूप्‌ से लेकिन कभी-कभी यही दवा असंतुलित रूप धारण कर लेती है। बहोत ही जोर जोर से बहने लगती है। जिससे मानव के लिए वही हवा संतुलनन न होकर असंतुलित हो जाती है। उसी तरह से मानव जिवन मे पानी महत्वपूर्ण है। पानी ही जिवन है। ऐसा कहा जाता है। लेकिन यही पानी अत्याधिक रूप में प्राप्त होने पर बाढ आ जाती है। जिससे मानव का जिवन असंतुलित हो जाता है। उसी तरह से मानव का दैनंदिन के कार्य यदि संतुलित रूप्‌ से चले तो अच्छा होता है। यदि वही असंतुलित

रूप से कार्य करे तो मानव का जिवन परिवर्तित हो जाता है। मानव का संपूर्ण जिवन ही बदल जाता है। मानव ने संतुलन को अपना ध्येय मान लेना चाहिए। असंतुलन से कुछ लिखने की चाह रखना चाहिए। उससे नया मार्ग खोलकर निकालना चाहिए। संतुलन यह सभी जलगह होना अत्यंत आवश्यक है। भगवान ने प्र्यावरण के सभी घटको का संतुलन बनाया है। लेकिन हम मानव के सोच के कारण प्र्यावरण के घटकों में असंतुलन निर्माण हो गया है। जैसे वातावरण मे ऑक्सीजन का प्रमाण दिनो दिन कम होकर कार्बन डाय ऑक्साईड का प्रमाण बढ रहा है। जिससे वातावरण के असंतुलन के कारण मानव के जिवन में खतरा निर्माण हो रहा है। ऑक्सीजन की कमी के कारण विभिन्न प्रकार की बिमारिया का सामना करना पड रहा है। अतः हम मानव को असंतुलित वातावरण को ज्यादा से ज्यादा प्रमाण मे वृक्ष लगातार संतुलित वातावरण मे परिवर्तित करना है।

२५) आदर X अनादर

मानव जिवन में आदर-अनादर का मान-अपमान के समान ही महत्व है। कभी हम आदर पाते है तो कभी अनादर पाते है। हमारे जिवन के दोन पहलु हमे हमेशा हमारे सामने होते है। हमे आदर पाना है तो अनादर को स्वीकार करना ही होगा। अनादर स्वीकार करने की क्षमता हमारे मे होगी तभी हम आदर पाने के काबिल हो सकेंगे। बिना अनादर के हमे आदर नही मिल

सकता। हमे अनेक बार अपनी सफलता पाने के लिए अनादर किये हुये व्यक्तीयों से भी अनादर मिलने पर बार-बार उसके साथ अच्छा व्यवहार करना ही होता है। जब हम उसके साथ अच्छा व्यवहार करते है तब उसे ऐसा लगता है की, हम जो इस व्यक्ती के साथ कर रहे है वे गलत कर रहे है। हमें इनके साथ सही करना चाहिए। हमारी भूल हो रही है। जो हम इसके साथ अनादर कर रहे है। हमे इसके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। वह एक दिन हमारे साथ अनादर करने वाला व्यक्ती आदर करके हमारी सहायता करने के लिए तैयार हो जाता है। ऐसे समय मे हमे अनादर करनेवाले व्यक्ती के द्वारा की गयी गलतियों को दुर कर लेना चाहिए। अपने गाव में सुधार करके एक नये कार्य को करने का प्रयास करना चाहिए। जिससे हमारी भी भलाई होगी। उसकी भी भलाई होगी। हमे ऐसा करने से दोनो की भलाई होकर एक नया कार्य करने की प्रेरणा मिलकर एक नया कार्य किया जायेगा। जो हमारे जिवन तथा उसके जिवन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

२६) अंत X अनंत

अंत याने समाप्त अनंत याने जिसका कोई अंत नही है। ऐसा कहा जाता है की इसका अंत मेरे हाथ मे है। यह मेरे हाथ से मारा जायेगा। लेकिन अंत यह किसी का किसी व्यक्ती के हाथ मे नही होता। यह सभी बाते भगवान के मर्जी के अनुसार होती है।

मानव किसी को जन्म नही दे सकता। तो मृत्यु भी वह दे नही सकता। उसे ऐसा लगता है की मैने उसका अंत कर लिया। लेकिन वह उसकी गलत सोच होती है। सुकरात की अच्छे बाते बोलने पर अर्थेस से उसे जहर पीना पडा लेकिन उसकी अच्छाई जो हम पर जहर पिलाने वाले लोगों ने उनका अंत कर दिया क्या ? नही आज कितने तो भी समय गुजर चुका है। लेकिन उनकी सत्यता अभी भी कायम है। सुकरात यह का ग्रस्त न बनकर अंत होकर भी अनंत हो गया । लेकिन जिन लोगों ने सुकरात को जहर दिया उनका जिवन अनंत होते ही अंत हो गया । यदि उन्होने सकरात की बाते मान लि होती तो उनके जिवन का अंत न होकर अनंत हो जाता ै हमे ऐसा जगना है। यह व्याप्ती हमारे से आगे बढ जायेगा। हमारे से अधिक लोगप्रिय हो जायेगा। वो इसके पैर खिंचने के लिए इसका अंत कर लो लेकिन यह आपकी गलत धारना है। आप उसका अंत नही कर रहे है। आप अपना अंत कर रहे है। यदि जो व्यक्ती आपसे आगे है तो आप उससे दुश्मनी की अपेक्षा दोस्ती कर लो। तो उसके गुण आप मे प्रवेश कर के आप भी आगे बढ जाओगे। क्यों की आगे बढने के अनेक रास्ते है। एक ही नही वह आगे बढा तो हम नही बढ सकते। ऐसा नही है। हमे हमारा अंत चाहिए तो अपने से कम बुद्धीमत्ता वाले व्यक्ती के साथ रहो। लेकिन हमे अपना अनंत विकास करना है तो अपने से ज्यादा बुद्धीमान वाले व्यक्ती के साथ रहना होगा। यह जिवनदाता निराला है की इस निराले जिवन की लिला सभी व्यक्ती नही समझ सकते। जिसने समझ लिया उसने अंत जिवन

का अनंत जिवन मे परिवर्तन कर लिया। नही तो जिससे नही समझा उसने अपने अनंत जिवन को अंत जिवन में बदल दिया। तुम्हारा जिवन है तुम्हे तय करना है अंत या अनंत।

२७) उत्तीर्ण X अनुत्तीर्ण

मानव जिवन यह उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण है। उत्तीर्ण याने पास अनुत्तीर्ण याने नापास फेल। हम जब कोई भी परिक्षा देते है। तो उस परिक्षा में हम सभी उत्तीर्ण हो जाते है तो कभी अनुत्तीर्ण हो जाते है। हमे उत्तीर्ण होने पर ज्यादा प्रमाण मे खुश नहि होना चाहिए। तथा अनुत्तीर्ण होने पर दु:खी भी नही होना चाहिए। बहोत से विद्यार्थी परिक्षा को एक खेल समझते है। तथा पढाई से दूर भागने की कोशिश करते जाते है। लेकिन परिक्षा देने के बाद जब निकाल आता है तो वे अनुत्तीर्ण का निकाल देखकर वे अपने आप को हराना नीचा समझते है। की वे खुद खुशी करने की कोशिश करते है। या खुदखुशी कर लेते है। लेकिन यह नही सोचते की हमे अनुत्तीर्ण होना नही है। तो हमे कडी मेहनत करनी होगी तो ही हम उत्तीर्ण हो सकते है। इसके लिए अनमूल्य समय नष्ट न करके अपने समय के अनुसार शिक्षको ने पढाया हुआ ज्ञान को दृढ करते जाना है। हम विद्यार्थीयों का महत्वपूर्ण ध्येय है। हमे जिवन में उत्तीर्ण होना ही है। यह ध्येय यदि हम विद्यार्थीयों ने निश्चय कर लिया तो उत्तीर्ण होने से हमे कोई शक्ती दूर नही कर सकती। हम हमेशा सफलता की राह पर चलकर उत्तीर्ण हो

सकते है। बहोत से विद्यार्थी परिक्षा को एक खेल मानकर उस परिक्षा के उत्तीर्ण होने के लिये गलत तरिकों का भी उपयोग करते है। लेकिन वे यह नही जानते की वे गलत तरिके अपनाकर भले ही उत्तीर्ण हो जाए। लेकिन वास्तव में वे अनुत्तीर्ण है। क्यों की उनकी अगली सिढी इसी सिढी पर बनायी गयी है। इसलिए वह गलत तरिके का उपयोग करके एक सिढी तो तय कर लेता है। लेकिन अगली सिढी तय करने के लिए उसे उसी गलत तरिके का उपयोग करना पडता है। या जिवन मे अनुत्तीर्ण का साहारा लेना होता है जो उनके जीवन का महत्वपुर्ण पहलु होता है। हमारा जिवन है उस जिवन को हमने कैसे जिना है। यह हमारे उपर निर्भर है। उत्तीर्ण - अनुत्तीर्ण यह हमारे जिवन के अंग है । जो हमारे कर्तव्य के उपर निर्भर है। अतः इन अंगो को हमने किस तरह से अपनाना चाहिए यह हमारे लिए हमारी सोच के अनुसार महत्वपूर्ण है ।

२८) देवता X असुर

हम मानव है लेकिन हमारे मे दो प्रकार के गुण होते है। एक असुर याने राक्षसी गुण, दुसरा देवता का गुण जो हमारे जन्म के साथ-साथ वातावरण से हमे प्राप्त होते रहते है । हमारे सोच के अनुसार हम एक असुर बन जाते है। तो कभी देवता हमारे सोच मे बार-बार परिवर्तन होते रहता है। यह परिवर्तन पर हमारी आंतरिक शक्ती के साथ बाहरी शक्ती भी होती है। यदि हमारी

आंतरिक शक्ती मजबूत है। तो बाहरी शक्ती हमे कितना भी असुरी शक्ती प्रदान करने पर भी हमारे जिवन पर उसका कुछ भी असर पडने वाला नही है। लेकिन हमारी आंतरिक शक्ती ही कमजोर है तो हमारे उपर बाहरी शक्ती का प्रभाव पडकर हम बहोत जल्दी असुर बन जाते है। लेकिन देवता बनने के लिए बाहरी शक्ती का उतना प्रमाण हमारे जिवन पर नदी हो पाता। बहोत कम प्रभाव बाहरी शक्ती का होता है। जब हमारी आंतरिक शक्ती मजबूत हो जाती है। देवता बनने के तभी बाहरी शक्ती हमे थोडे बहोत प्रमाण में देवता बनने के लिए प्रभावित करती है। असुर-देवता यह मानव के जिवन के दो अंग है। इस अंग का किस तरह से कहाँ उपयोग करना है यह हमारी सोच पर निर्भर करता है। यदि हम चाहे तो असूर भी बन सकते है।

२९) इति X अथ

इति याने इतिहास याने भूतकाल अथ याने भविष्यकाल जो आने वाला है। जो हमारी गलतियों को हमें बताने की कोशिश करते रहता है। की हमारे से इति में कौनसी गलतियां हुयी है। जिसे हमे अथ के लिए सुधारना है। इतिमे जो कार्य हम कर लेते है यह कार्य के बल पर हम अथ मे उस कार्य को और बढा सकते है। जैसे मानव ने पहिए का शोध किया। लेकिन मानव के पहिए का आविष्कार को धिरे-धिरे परिवर्तित करके बैलगाडी, सायकल, मोटार, ट्रेन, रिक्शा जन्म कितने तो भी यातायात के

हि साधन नही तो उसके साथ ही बडे-बडे कारखाने पहिए के बल पर निर्माण किये गये। जो मानव की इति की सफलता अथ के सफलता के लिए महत्वपूर्ण साबित हुयी है। हमें इति में जो असफलता प्राप्त की है उस असफलता को हमे अथ में सफलता प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न करने होगे। जो हमारे लिये तथा सभी की भलाई के लिए आवश्यक है। हम अपने आप को इति की गलतियाँ को सुधारने के लिए इतना मजबूत बना लेंगे की अथ मे कोई हमें हरा ना सके। इति यह हमें बार बार हमारी गलतियों को हमारे सामने अथ में लाने की कोशिश करते जाता है। इस अथ के लिए हमें इति को समझना ही अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें अपना भविष्य बनाने के लिए अपने आप में परिवर्तन करना होता है। अपने आप मे शारिरिक, मानसिक रूप से परिवर्तित करना होता है। यदि हमने अपने आप को शारिरिक, मानसिक रूप से परिवर्तित कर लिए। तो भविष्य याने अथ में कोई हमें असफलता मिल नही सकेगी। तथा हमें अपनी सफलता के मार्ग अपने आप मिलकर हमारा मानव जिवन परिवर्तित होते जायेगा। जिस तरह से एक वृक्ष यह सुख जाता है। क्यों की उसके जिवन घटक उसे अच्छी तरह से मिल नही पाते। इसलिये वह हराभरा न होकर सुखते जाता है। लेकिन उसी वृक्ष को जब सभी जिवन घटक मिल जाते है तब वही सुखा हुआ वृक्ष फिर से हरा-भरा होने लगता है। उसमें हरीयाली के साथ साथ फुल तथा फल भी आने लगते है। जिसमें घोसला बनाने की चाहत हर पंछी में होती है।

३०) मितव्यय X अपव्यय

मितव्यय याने कम पैसे खर्च करने वाला तथा अपव्यय याने अधिक पैसे खर्च करनेवाला ऐसा कहा जाता है। लेकिन यह पैसा होने पर है। यदि मानव के पास पैसा है तो वह खर्च करेगा। यदि पैसा नही है तो वह खर्च नहि करेगा। लेकिन बहोत से लोगों की विचारधारणा अलग अलग होती है। पैसा होने पर भी वे पैसा को खर्च नही करते। उसे समान वाले मितव्यय कहते है। लेकिन जो पैसे को खर्च करते है उसे सब तारिफ करते है। लेकिन तारिफ भी पैसे खत्म करते समय सभी साथ में होते है। लेकिन पैसे खत्म हो जाने के बाद सब दुर भागते जाते है। अपव्यय यह पैसे का ही नही होता तो बहोत सी वस्तुओं का अपव्यय होता है। पानी का अपव्यय, खनिज अन्य प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय मानव के हाथों से हो रहा है। जिससे मितव्यय करना आवश्यक है। यदि हम अपनी तथा समाज की भलाई चाहते है तो सभी प्राकृतिक संसाधनों का मितव्यय से उपयोग करना चाहिए। मितव्ययता यह हमारे जिवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। जिससे इस मितव्ययता के कारण हम किसी भी वस्तु की कमी महसुस नही कर सकेंगे ।

३१) उदय X अस्त

उदय याने उदित होना। अस्त याने बुझना जैसे हम मानव को सूर्य सबेरे पूर्व दिशा में उदय होते दिखाई देता है। श्याम को पश्चिम दिशा में अस्त होते दिखाई देता है। हमारे मानव के जिवन में उदय और अस्त दिन की शुरूवात और सबकी शुरूवात शुरू होती है। उदय के साथ दिन शुरू होता है। अस्त के साथ रात शुरू होती है। दिन में हमें सूर्य का उजाला यह कार्य करने के लिए मिलता है। रात के समय अस्त सूर्य का होने के कारण अंधेरा मिलता है। लेकिन मानव ने अपने बौद्धिक कुशलता के कारण रात में भी अंधेरे मे उजाला कर लिया है। उसे ऐसा लगता है की उसने रात में उजाला तो कर लिया अपना कार्य भी रात में करता है। लेकिन रात में उसे आराम करना अत्यंत आवश्यक होता है। जो व्यक्ती रात के समय आराम ठिक से कर लेता है वही अपना कार्य ठिक से करने की कल्पना कर सकता है। उसे उदय के समय काम और अस्त के समय आराम होना अत्यंत आवश्यक है। जो यह दिनचर्या करता है वह जिवन में हमेशा कम से कम समय में अधिक से अधिक प्रमाण में कार्य करने की कुशलता प्राप्त कर लेता है। उदय-अस्त हमारे जिवन में अत्यंत आवश्यक है। यदि अस्त सूर्य ना होता तो हमारे शरिर को आराम न मिलकर आने वाले उदित सूर्य के साथ हमे काम नही कर पाते। हमारे जिवन के सुंदरता के लिए सूर्य का उदय होना जितना महत्वपूर्ण है उसी तरह से अस्त भी महत्वपूर्ण है। हमे जिवन मे कोई भी कार्य करते

समय यह नही देखना है की हमारे जिवन में सूर्य उदय है या अस्त हमें अस्त सूर्य के आगे झुककर नही मुकाबला करके उसे उदित होने के लिए बाध्य कर लेना चाहिए।

३२) मृत्यु X अमर

सभी जिव प्राणी की मृत्यू यह अटल है। लेकिन मानव को मृत्यू अटल है। वह याद होने पर वह अनेक भ्रष्टाचारी मार्ग का अवलंबन करता है। उसे मृत्यू से भय भी है। लेकिन मृत्यू की परवाह न करके जाने-अनजाने में वह बहोत से कार्य कर लेता है। उसे ऐसा लगता है की हमारा कोई क्या कर लेगा। लेकिन हम जिस तरह के कार्य करते है उसी तरह की मृत्यू हमे मिलती है। मृत्यू का दुसरा रूप है अमर इस संसार में कोई शारिरिक रूप से अमर नही हुआ है। क्यों कि विधी का नियम ही है मृत्यू होगी। तभी नये जिव प्राणी का जन्म होगा। लेकिन यदि हमें इस पृथ्वी पर अमर होना है तो अपने कार्य के द्वारा। ऐसे कार्य करो जो कार्य हमारे मृत्यू के बाद भी हमारी कार्य प्रणाली लोगों को प्रेरित करते रहेगी। इस कार्य प्रणाली के बल पर हम इस पृथ्वी पर अमर हो जायेंगे। आप देखो इतिहास के पन्ने पलटकर उन न में महान व्यक्तीयों के मृत्यु के बाद उनके शरिर का पंचतत्व में विलीन हो गया। लेकिन उनके कार्य अभी भी हम मानव के लिए अमर है। जो हमें प्रेरणा देते रहते है। उसी प्रेरणा को प्राप्त करके हमे नया ज्ञान प्राप्त करना है। उन्ही के समान इस संसार में महान हो

जाना है। भगवान हमें कार्य करते समय जिवन जिते है। तो हमारे मन में मृत्यू का डर रहता है। लेकिन उस डर से हमें भागना नही चाहिए। भगवान ने जो मृत्यू का डर हमें दिया है उसे गले से मलापुर हार समझकर पहन लेने से हम अधिक से अधिक बलशाली कार्य कर सकते है। सिर्फ ध्यान रखना है की कार्य यह अच्छाई के लिए ही होना चाहिए।

३३) सक्षम X असक्षम

सक्षम या पूर्ण विकसित अक्षम याने अपूर्ण विकसित मानव दो प्रकार के कार्य करने वाले होते है। एक मानव होता है जो अपने कार्य में सक्षम होता है। वह कठिन से कठिन कार्य सरलता पूर्वक कर लेता है। तो दुसरा व्यक्ती होता है जो अपना कार्य करने में अक्षम होता है। उसे अपना कार्य ही ठिक से करते नही आता है। जो सक्षम होता है वह व्यक्ती चाहे कोई भी क्षेत्र का क्यो ना हो वह हमेशा आगे ही बढता जाता है। तथा सफलता उसके पैर चुमती है। जो व्यक्ती अपने बलपर खडे न रहकर दुसरों के बल पर कार्य करने की कोशिश करता है वह कितना भी अच्छा कार्य करें। उसके कार्य अक्षमह ी कहलाए जाते है। मानव जिवन ही उसके उपर है। उसे सक्षम मानव बनना है या अक्षम मानव बनना है।

३४) अर्थ X अनर्थ

मानव जिवन में अर्थ-अनर्थ का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम जो बाते बोलते है उसका कोई मानव अर्थ लगाता है। नही तो कोई अनर्थ भी लगाता है। यदि किसी को अपने कही गयी बातों से वरिष्ठता नही झलकती तो वह अर्थ लगाता है। यदी अपनी कही गयी बातों मे वरिष्ठता छलकती है तो अनर्थ लग जाता है। मानव में विविधता यह गुणों की पहचान है। इस विविधता को ध्यान में रखकर हमे अपने शब्दों को अर्थ में ही बदलना चाहिए। अनर्थ का सहारा नही लेना चाहिए। अर्थ का अनर्थ निकलने पर उसका बुरा असर भी हो सकता है। बहोत से ऐसे शब्द है जिन शब्नों के अनेक अर्थ होते है। शब्नों के अर्थ अगले वाला क्या लगायेगा। यह उसके उपर निर्भर होता है। वह चाहे तो शब्नों का अच्छा अर्थ भी लगा सकता है तो वही शब्द का अनर्थ ीी लगा सकता है। उसकी सोच पर निर्भरर करता है उसे कैसा अर्थ लगाना है।

३५) सनाथ X अनाथ

सनाथ याने समाने सामाजिक नाथ याने वाली जिस व्यक्ति का सामाजिक वासी है। उस व्यक्ति को सनाथ कहा जाता है। लेकिन अनाथ का अर्थ है सिका सामाजिक वासी नही है। ऐसे व्यक्ती को अनाथ कहा जाता है। बहोत से बालक सनाथ होने पर

भी उन्हे अनाथ का जिवन जिना पडता है। अनाथ बालक को अपनी तकदिर के कारण सनाथ का जिवन मिल जाता है। यह संसार दोनों व्यक्तियों से भरा है। सनाथ और अनाथ दोनो का विकास होता है। सनाथ का भी और अनाथ का भी । लेकिन दोनो के विकास की दिशा यह अलग-अलग होती है। कर्ण यह महाभारत मे सबसे बुद्धीमान शक्तीशाली व्यक्ती था। लेकिन उसके जन्म ने उसे अनाथ बना लिया था। जिससे उसे अनेक बार अपमान का जिवन जिना पडा। उसकी शक्ती की पहचान सभी को होने पर भी उसका अपमान बार-बार करते थे। क्यों की वे अनाथ थे। सनाथ नही ।

३६) पराया X अपना

पराया-अपना यह दोनो विरूद्धार्थी शब्द हम मानव के जिवन में कभी भी आते है। चले जाते है। इन शब्दों को ध्यान में रखकर हमें अपना जिवन जिना होता है। जो अपना होता है हम उसे पराया समते है। जो पराया होता है उसे हम अपना समझते है। जिससे हम अपना जिवन जिते समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। हम मानव को सोच दि है भगवान ने। उस सोच के अनुसार हमें पराया और अपना में अंतर उनके व्यवहार से जान लेना चाहिए। जानकर वह ज्ञान अपने पास ही रखकर प्रगट नही करना चाहिए। यदि हमने वह ज्ञान प्रगट किया तो जो अपने है वह भी पराये हो जाते है। हमे अपनों को अपना बनाकर

रखकर पराया को अपना बनाने की कोशिश करते रहना चाहिए। जितने लोग अपने होंगे हमे उतने प्रमाण में सफलता मिलती जायेगी।

३७) विष X अमृत

यह विष है। हमे पिने से हमारा जिवन समाप्त हो जायेगा। यह अमृत है इसे पिने से हमारा जिवन उज्वल हो जायेगा। ऐसा हम अनुभव भी करते है। तथा प्रत्यक्ष में देखते भी है। विष याने शराब अमृत याने दुध दोनो हमारे सामने है। लेकिन हमें दूध पिने में त्रास आता है। हमारे पास पैसे नही है। लेकिन शराब पिने के लिए हमे त्रास भी नही आता और हमारे पास पैसे भी । उसी तरह से हमारे जिवन मे प्रत्येक पल यह विष और अमृत के समान आते - जाते है। जो हमारा मित्र होता है वह हमारे लिए विष के रूप में सभी कार्य करता है। तो जो हमारा शत्रु होता है वह हमारे लिए कभी अमृत के रूप में कार्य करता है। विष-अमृत की पहचान हमे होना चाहिए। हमारे विकास के लिए यह दोनों भी आवश्यक है। विष-अमृत। शंकरजी ने यह दोनो मानव प्राणी एवं देवता तथा दुसरा राक्षस दोनो को उनकी ईच्छा के अनुसार बाँट दिया। लेकिन उन्होने स्वयम जहर पि लीया। जहर उन्होने कडवा होने के कारण देवता या राक्षस उसमें किसी को भी देना पसंत नही किया। उन्हे मालूम था की विष - अमृत की अपेक्षा जहर यह श्रेष्ठ है। और जो मानव इसे पि लेता है। वह

सभी कुछ पा सकता है। विष-अमृत पाना सभी मानव की चाहत होती है। लेकिन पृथ्वीपर जो अलौकिक मानव ही होते है। जो जहर पीना चाहते है। तथा जहर पी लेते ही उनका जिवन इतना धम्म हो जाता है की उसकी कल्पना भी आप नही कर सकते ।

३८) बहुज्ञ X अल्पज्ञ

बहुज्ञ याने बहोत ज्यादा अल्पज्ञ याने थोडासा । हमारे सामने कोई वस्तु बहुज्ञ के रूप में हमें प्राप्त होती है तो कोई वस्तु अल्पज्ञ के रूप में प्राप्त होती है। बहुज्ञ यह प्रकार में हमे कोई वस्तु मिलने पर उसका अत्याधिक उपयोग नही करना चाहिये। बल्की उसका अल्पज्ञ के रूप में उपयोग करके हमे वह वस्तु संभालकर रखना चाहिए। अल्पज्ञ में यदि कोई हमे वस्तु प्राप्त होती है और हमारे सामने वाले को वही वस्तु बहुज्ञ के रूप में प्राप्त होती है तो हमे दु:खी नही होना चाहिए। हमे जितना कुछ मिलता है आसानी से उस वस्तु को खुशी-खुशी लेना ही सफलता की निशानी है।

३९) सुलभ X अलभ्य

सुलभ याने सरलतापुर्वक अलभ्य याने कठिनतापूर्वक हमे सुलभ रास्ते पर भी जिवन जिना पडता है। अलभ्य रास्ते पर भी जिवन जिना पडता है। दोनो रास्ते हमारे सामने होते है। एक रास्ता सुलभ है। जिसमें कोई कठिनाइयाँ नही होगी । लेकिन हम उस रास्ते पर चलते समय हमे कुछ नया सिखने को नही

मिलेगा। लेकिन रास्ता अलभ्य है तो उस रास्ते पर हमे अनेक प्रकार का ध्यान अपने आप आत्मसात हो जायेगा। जैसे भगवान के मंदिर में जाने के लिए कुछ लोगों को लाईन में खडे रहकर अनेक घंटो के के बाद भगवान के दर्शनन हो जाते है। यह रास्ता उन भ्रष्टजनों के लिए अलभ्य है । इस रास्ते पर चलते समय भक्तजन को अनेक ज्ञान की अनुभूति अपने आप हो जाती है फिर भगवान के दर्शन होते है। उस दर्शन में अपना अलग ही महत्व होता है। लेकिन कुछ लोग पैसे के बल पर लाइन में खडे न रहकर सिधा भगवान के प्रवेशद्वार में चले जाते है। उन्हे अलभ्य रास्ते का ज्ञान प्राप्त नही हो पाता। वे भगवान के दर्शन तो करते है। लेकिन उतनी श्रद्धापुर्वक नही जो अलभ्य रास्ते से आये भक्तजन करते है।

४०) न्युन X अधिक

न्यून याने थोडासा अधिक याने ज्यादा प्रमाण में हमे हमारे जिवन में कोई वस्तु न्यून प्रमाण में प्राप्त होती है तो कोई वस्तु अधिक प्रमाण में प्राप्त होती है। न्यून होने पर हमे नाराज नही होनाचाहिए। तथा अधिक मिलने पर हमें अत्यंत खुश भी नही होना चाहिए। न्यून से अधिक बनाने का कौशल्य हमारे मे होना चाहिए। लेकिन अधिक को न्यून नही बनाना चाहिए। हमारे मे न्यून क्षमता है। उस क्षमता के बल पर अधिक क्षमता निर्माण करने की योजना बनाने के लिए हमें ज्ञान प्राप्त करने की

कोशिश करते रहना चाहिये । हमारे मे ज्ञान प्राप्त करने की न्यून क्षमता है। दुसरों से कम क्षमता है। लेकिन उस क्षमताओं को धिरे-धिरे आगे बढाते जाना है। अपने आप को अधिक क्षमता वाला बनाकर उस ज्ञान का उपयोग अपनी क्षमता के अनुसार समाज तथा देश के लिए करना है। जो कार्य अतुलनिय होगा। जैसे वाल्मिकी ऋषी में न्यून क्षमता थी। लेकिन उन्होने अपनी न्यून क्षमताओं को पहचानकर अधिक क्षमता प्राप्त करके रामायण इस 'महाकाव्य' की रचना की जो विश्व के लिए आज भी ज्ञानवर्धक प्रेरणा स्त्रोत है। अतः वाल्मिकी ऋषी की न्यून क्षमताओं का संग्रह करकेउन्होने उसे अधिक क्षमताओं में परिवर्तित कर लिया । यह ज्ञान अधिक प्रमाण में हमें रोशनी दे रहा है।

४१) अतिवृष्टी X अनावृष्टि

अतिवृष्टी याने बरबादी अनावृष्टि याने कुछ भी नही दोनो भी वृष्टि मानव के कल्याण के लिए नही है। जब पृथ्वी पर अतिवृष्टि से बरसात होती है। वो फसले नष्ट हो जाती हे। अनावृष्टि होती है। तो फसल होती ही नही है। अतः मानव जिवन के लिए अतिवृष्टि-अनावृष्टि एक चुनौति होती है। इस चुनौती को किस तरह से स्वीकार कर लेना चाहिए। यह प्रत्येक मानव के ज्ञान पर निर्भर करता है। महाराष्ट्र मे जब अनावृष्टि १६३० में याने अकाल पडा था। उस समय शिवाजी महाराज ने बडे

गंभीरता से इस समस्या पर विजयी पायी थी। क्यों की उस समय मुगलों का राज्य था। लोग दाने-दाने के लिए तरस गये थे। अतः ऐसी स्थिती लोगों की थी। तो जनावरों की क्या स्थिती रही होगी। यह कल्पना हम मानव तो आसानी से लगा सकते है।

४२) गरीब X अमिर

इस पृथ्वी पर जब मानव का जन्म होता है। तो किसी बालक का जन्म-गरिब परिवार में तो किसी बालक का जन्म -अमिर के घर में होता है। अमिर के बच्चो को आर्थिक परिस्थिती के लिए लढना नही पडता। उन्हे विकास के सभी दरवाजे खुले रहते है।`किन गरिब घर के बालकों के सामने अनेक समस्याओं के साथ-साथ आर्थिक समस्याएँ अत्यंत जटिल होती है। इन आर्थिक समस्याओं पर विजयी होकर उन्हे अपना विकास करना होता है। इस विकास के क्रम में उन्हे अनेक परिक्षाओं से गुजरना होता है। इस परिक्षा में बहोत से बालक पास हो जाते है। याने विजयी होकर अपना विकास करते जाते है। लेकिन बहोत से बालक वही रूक जाते है। तो कुछ बालक बिच रास्तों में रूक जाते है। लेकिन जो बालक आगे बढते है उनके कार्य इतने अतुलनिय होते है की इनकी तुलना करना बहोत ही महान होता है। जैसे डॉ. बाबासाहेब ज्योतिबाराव फुले इन्होने आर्थिक परिस्थिती पर विजयी होकर समाज को एक नयी आशा की किरण अपने ग्यान से दिखायी है। उनका जन्म गरिब परिवार में होने पर भी वे

समाज की दृष्टि से महान अमिर समाज सुधारक बन गये। इसके लिये हमे अपने जन्म को ना देखकर अपने कर्म के तरफ ध्यान देना चाहिए। हम यदि अपने कर्म ठिक से करते है तो हम गरिब से अमिर कुछ ही पलों में बन सकते हे। लेकिन हमारे कर्म अच्छे नही है तो हम कुछ ही पल में अमिर से गरिब भी बन सकते है। इस संसार मे कोई भी व्यक्ती यह सोचता होगा की वह पैसे से अमिर है। तो अमिर है यह उसकी धारणा अत्यंत गलत है। कोई भी व्यक्ती पैसे के बल पर अमिर तो हो सकता है। लेकिन ध्यान के बल पर जो व्यक्ती अमिर होता है उसकी बराबरी व्यक्ती नही कर सकता। कर्म से व्यक्ती महान होता है। पैसे से नही।

४३) पुरातनX अधुमातन

पुरातन याने पुराना अधुमातन याने आधुनिक पुरातन काल से यह वस्तु हमारे पास है। पुरातन में लोगों ने हमारे पूर्वजों में ऐसे कार्य किये थे। ऐसी चर्चा अधुनातन में हम हमेशा करते है। इसी कार्य के आधार पर हम नया कार्य करने की सोचते है। पुरातन में शासन प्रणाली का क्या आधार था शिवाजी महारज के आदर्श शासन प्रणाली की क्या विशेषता थी। उसी आदर्श के आधार पर भारत देश स्वतंत्र होने के बाद नया पद्धती का आधुमातन शासन पद्धति में उपयोग किया गया। जो एक प्रेरणा के रूप मे हमारे सामने है। पुरातन में लिखे गये लेख, प्रगति, विचारो तथा कार्य का उपयोग यदि हम अधुनातन में करें तो हमें

सफलता के लिए बहोत बड़ा सहयोग मिल सकता है। तथा उसी के आधार पर हम अपना जिवन अधनातन में सफल बना सकेंगे।

४४) विराग X अनुराग

विराग याने क्रोध अनुराग याने क्रोध नही। गाने को हम कहते है अनुराग मे गाओ। याने क्रोध मे मत गाओ। उस गाने को हँसते-हँसते गाओ। हमारा स्वभाव विराग-अनुराग हो जाता है। परिस्थिती के अनुसार हमारे स्वभाव मे परिवर्तन आ जाता है। कभी दुसरे के प्रति हमारा स्वभाव विराग होता है। तो कभी अनुराग हो जाता है। विराग स्वभाव को अनुराग स्वभाव मे किस तरह से परिवर्तन करे। यह हमारे उपर होता है । यदि हमने अपने स्वभाव को परिस्थिती के अनुसार बदलने की कोशिष की तो हम अवश्य ही सफल हो सकते है। इसके लिए हमे अपने आप पर नियंत्रण पाना अत्यंत आवश्यक है। विराग से बना बनाया काम हमारा नष्ट हो सकता है तो अनुराग से जो काम नही बन रहा है। वह भी बन सकता है।

४५) दीर्घायु X अल्पायु

दीर्घायु याने लंबी उम्र वाला अल्पायु याने कम उम्र वाला। हमे जिवन जिते समय यदि कोई आशिर्वाद देता है। तो हमे दिर्घायु का आशिर्वाद मिलता है। लेकिन हमारे नसिब में क्या है यह हम नही बता सकते। हमारी दीर्घायु है या अल्पायु है। यदि हमे

दीर्घायु चाहिए तो हमें निरदेशन होना चाहिए। तथा अपना स्वास्थ्य अच्छा रखना चाहिए। लेकिन बहात से लोग दीर्घायु जिने की अपेक्षा होने पर भी उन्होने यदि बुरी आदते है। जैसे शराब पिना, अन्य व्यसन करना। जिसे उनकी आयु अल्पायु हो जाती है। हमारी आयु भगवान ने निश्चीत की है। लेकिन वह हमारे हाथ में है की उस आयु का किस तरह से उपयोग करेंगे। यह हमारे हाथ में है। दीर्घायु जिवन जिना है या अल्पायु जिवन जिना है।

४६) विरक्ति X अनुरक्ति

विरक्ति याने खाली -अनुरक्ति याने खाली नही। यह स्थान खाली है वह खाली नही है। ऐसा हम बोलचाल की भाषा में कहते है। हमे मानव की सोच के अनुसार भगवान ने हमे मस्तिष्क दिया है। उस मस्तिष्क को विरक्ति रखना है। या अनुरक्ति । यह संसार ज्ञान का भंडार है। इस संसार में जितना ज्ञान हम प्राप्त करना चाहेंगे। प्राप्त कर सकते है। हमारे मस्तिष्क मे हम जितना ज्ञान जमाना चाहेंगे उतना ज्ञान हम समा सकते है। इसके लिए ध्येय है। अपने प्रयत्न की यदी हम अपने विरक्ति मस्तिष्क को अनुरक्ति मस्तिष्क बनाना चाहेंगे तो हमे ग्यान प्राप्त करने के लिये हमे प्रयत्नशील होना अत्यंत आवश्यक है। तो ही हम विरक्ति शरिर का अनुरक्ति शरिर में रूपांतरण कर सकते है।

४७) अनुज X अग्रज

अनुज याने छोटा अग्रज याने बड़ा अनुज और अग्रज यह दो प्रकार से मानव का स्थान होता है। एक जन्म के अनुसार तो दुसरा अपने बुद्धीमत्ता के कार्य के अनुसार हम जन्म से अनुज है। लेकिन अपनी बुद्धमता और कार्य के अनुसार अग्रज भी बन सकते है। हम अग्रज में जन्म हुआ है। लेकिन हमारी बुद्धीमता उतने प्रमाण में नही है। हमारे कार्य उतने नही है। तो हमें अग्रज होने पर भी अनुज का स्थान ग्रहण करना होता है। अनुज-अग्रज यह स्थान प्राप्त करना यह हमारे जन्म पर है। तो भी हमारे कर्तव्य उस स्थान में परिवर्तन करके हमारे जिवन में परिवर्तन किया जा सकता है। यदि हम अपने कार्य में भी अग्रज हो सकते है। हमें जन्म को नही देखना चाहिए । जन्म के स्थान पर हमें अपने कर्तव्य को देखना चाहिए। जन्म और कर्तव्य में जमिन-आसमान का अंतर है। जो हमें पूर्ण करना होता है। हम अपने जन्म के अंतर को अपने कर्तव्य से पूर्ण कर सकते है। हमें ऐसी आज्ञा देना चाहिए। जिससे हमारी आज्ञा का अवज्ञा ना हो। इसका ध्यान रखकर ही हमे आज्ञा देना चाहिए।

४९) इष्ट X अनिष्ट

हमारे इष्ट देवता है। यह हमारे अनिष्ट राक्षस है। हमारे इष्ट देवता हमारे लिए अच्छा ही करते है। इसलिए हमे अपने इष्ट

देवताओं की पुजा करते है। लेकिन जो राक्षस अनिष्ठ होते है। उनकी हम पुजा नही करते। क्यों की वे हमारे लिए अनिष्ट कार्य करते है। वे हमारे दुश्मन होते है। उसी वजह से पृथ्वी पर जिवन जिते समय कोई मानव हमारे इष्ट मित्र होते है। वो कोई मानव हमारे अनिष्ट मित्र होते है। हमारा इष्ट मित्र तो विद्या याने पुस्तक है। जो हमारे साथ हमेशा रहकर हमारा मार्गदर्शन करती है। यदि आप मानवों की अपेक्षा पुस्तक को अपना इष्ट मित्र मानते हो तो जिवन में अधिक प्रमाण मे सफल हो सकते हो। हमारे हाथ में है की, हमे कौन सी पुस्तके पढना चाहिए। और कौनसी नही। आज जो व्यक्ती आपका इष्ट मित्र करके दावा करता है। वह कल आपके उपर आपत्ती आनेपर आपका अनिष्ट मित्र भी दो सकता है। या जो अनिष्ट मित्र है वह आपका इष्ट मित्र भी हो सकता है। कहा जाता है की 'सुख के सभी साथी, दुःख मे ना कोई' जो आपके सुख के साथी है आप उनसे पुछो वे आपके दुःख में साथ देंगे क्या नही देंगे। आपके उपर दुःख का छया मंडराने लगेगा। तब वे आपसे दुर भागते जायें। जो एक दिन इष्ट मित्र बनने का दावा करते थे। जिस तरह से हरे-भरे वृक्ष पर सभी पक्षी बसेरा कर लेते है। लेकिन जैसे ही वृक्ष सुखने लगता है वैसे ही सभी पंछी उससे दुर भागने लगते है। इस लिए यदि आपको इष्ट मित्र चाहिए तो ऐसा इष्ट मित्र खोजो जो आपके सुख मे भी साथ दे। और दुःख में भी। जो हमारे दुःख मे साथ देता है वह हमारा सच्चा मित्र होता है। हमे भी उससे उसी तरह से मित्रता करना चाहिए जिस तरह से वह हमारे से मित्रता करता है।

मित्र यह एक सच्चा जिवन साथी होता है। चाहे वह छोटा हो या बडा । रिश्ते मे हमारा कोई भी व्यक्ती हो। लेकिन मित्र यह ऐसा होना चाहिए तो हमेशा दृष्टता पूर्ण ही हमारे सक व्यवहार करे। अनिष्टता पूर्ण नही ।

५१) उत्कर्ष X अपकर्ष

उत्कर्ष और अपकर्ष यह हमारे जिवन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसे हम मानव वृक्ष लगाते है त बवह जमिन में अपनी जडे मजबूत करके अपना उत्कर्ष करता है। तथा फल फूल हम मानव को देते जाता है। फल-फुल प्राप्त होने के बाद बहोत वर्ष त कवह वृक्ष जिवित रहता है। लेकिन उन में से कुछ वृक्ष यह कालावधी जिवित होने की कम होने पर उनका अपकर्ष होते जाता है। तथा धिरे-धिरे वे अपकर्ष जमिन में होकर नया वृक्ष निकलना शुरू हो जाता है। नये जिव का उत्कर्षण तथा पुराने जिव का अपकर्षण यह प्रकृति का नियम है। उस नियम के अनुसार प्रकृति का नियम है। उस नियम के अनुसार प्रकृती के सभी सजिवों का उत्कर्षण होता है। उत्कर्षण के बाद अपकर्षण भी होते जाता है। अत: हम मानव भी एक सजिव प्राणी है। हमारे भी जिवन का उत्कर्षण होने के बाद अपकर्षण एक दिन होना ही होता है। इस मानव जिवन के बिच का जो अंतर उत्कर्षण और अपकर्षण का है। वह एक अनोखा समय हमारे जिवन का होता है। जो हमें अपने कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। हम ऐसे

समय विधी को पहचानकर अपना जिवन निर्वाह के साथ - साथ अपना कार्य करते रहना चाहिए। अपना जिवन उत्कर्ष-अपकर्ष का है। जो हमे समझ लेना चाहिए।

५२) उपस्थित X अनुपस्थित

उपस्थित-अनुपस्थित यह भी मानव जिवन में महत्वपूर्ण है। हमे कहाँ उपस्थित रहना है कहाँ अनुपस्थित रहना है यह हमारे उपर है। हमें यदि अपना कर्म करना है। उस स्थान में हमें उपस्थित रहना है। जिस स्थान में हमारा कर्म पूर्ण हो जाता है। उस स्थान में हमे उपस्थित न रहकर अनुपस्थित रहकर हमे अपने कर्म का स्थान निश्चीत ढुंढ लेने के बाद वहाँ उपस्थित रहना है। हमारे जिवन का चक्र जैसे-जैसे आगे बढते जाता है। वैसे-वैसे हमारे कार्य करने की सिमा रेखा मे भी परिवर्तन होते जाता है। जब हमारा जन्म होता है। तब हमारी उपस्थिती हमारे घर में ही होती है। लेकिन हमारे शारिरिक, मानसिक, भावनिक विकास के साथ साथ हमारी बुद्धीमता, शारिरिक क्षमता के अनुसार हमें कार्य मिल जाता है। उस कार्य को करने के लिए हमें उपस्थित रहना होता है। हमें उस कार्य को करने का श्रेय भी दिया जाता है। लेकिन बहोत कम लोग यह कार्य कर पाते है। अपना कार्य करने के लिए वे उपस्थित तो रहते है। लेकिन शारिरिक रूप से मानसिक रूप से वे उपस्थित नही रह पाते। उन्हे लगता है की हम अपने कार्य के लिए उपस्थित है। हमने वह कार्य नही किया

तो क्या उपस्थित होने के कारण उस कार्य का श्रेय हमें लिना ही चाहिए। लेकिन वे नही जानते की वे उपस्थित रहने पर भी अनुपस्थित का कार्य किया है। फिर उस कार्य का श्रेय वे कैसे प्राप्त करले। तथा जिसका वे हकदार है ही नही लेकिन यह अलग-अलग मानव की अलग-अलग सोच है। उन्हे सोचने के लिए मजबूर कर लेती है।

५४) चल X अचल

चल याने एक स्थान से दुसरे स्थान में जाने वाला। अचल याने एक ही स्थान में रहनेवाला। इस पृथ्वी पर चल-अचल दोनो ही प्रकार हम मानव को देखने को मिलते है। जैसे प्राणी चल है लेकिन वृक्ष यह अचल है। दोनो भी सजिव प्राणी है। लेकिन दोनों में अंतर कितना है। वृक्ष अपनी टहनियां-पत्ते हिला सकता है। लेकिन मानव अपने सभी अंगो को हिलाकर चल भी सकता है। लेकिन भगवान ने वृक्ष को अचल बना दिया है। सृष्टि की सुंदरता के लिए यदि वृक्ष भी प्राणीयों के समान चल होते तो यह सृष्टि उतनी सुंदर नही दिखायी देती। जितनी सुंदर आज वह दिखायी दे रही है। मानव यह चल है। लेकिन उसे बहोत बार अचल भी रहना होता है। जैसे वह एक स्थान से दुसरे स्थान में गाडी से सवारी कर रहा होता है। तो उसे उस गाडी पर अचल रहना होता है। भले ही गाडी चल रूप में होकर उसे एक स्थान से दुसरे स्थान में पहुँचा देती है। लेकिन यदि वह गाडी पर चलना

चाहेगा तो उसे जिस स्थान पर पहुँचना है उस स्थान प रवह पहुँच नही सकता। उसी तरह से हमारे जिवन में भी कार्य प्रणाली मे हमे बहोत बार अपनी बुद्धीमत्ता के अनुसार न चल होकर अचल भी रहना होता है। यदि हमने सभी जगह चल रूप धारण कर लिया तो हम हमेशा के लिए अचल हो जायेंगे। इसलिए अचल रूप में रहकर अपने गुणों का विकास करके हमे संपूर्णतः गुणों का विकास करने चल बन जाना ही बुद्धीमता है। हमारे यहा पुरूषों का चरित्र आप देखोगे तो हमे उनका जिवनक्रम उसी रूप मे दिखायी देगा। गांधीजी के जितने भी कार्यक्रम अंग्रेज सरकार के खिलाफ थे। वे उसी रूप में थे। गांधीजी कभी चल रूप में तो कभी अचल रूप में कार्य करते थे।

५५) देय X अदेय

देय याने देना। अदेय याने लेना। इस संसार में देना-लेना तो चलता ही रहता है। बिना देने लेने के हम कुछ भी नही कर सकते। चाहे हम ज्ञान का देय-अदेय कर रहे है। या वस्तु का देय-अदेय कर रहे है। हमारे मानव जिवन सबेरे से शाम तक शाम से सबेरे तक यही क्रम चलते रहता है। जिसको ही जिवन कहा जाता है। देय-अदेय के बिना मानव जिवन जि नही सकता। अतः जो व्यक्ती देय-अदेय का जितने प्रमाण में उपयोग करता है। उसका उतने प्रमाण मे विकास होते जाता है।

५६) न्याय X अन्याय

यह शब्द हमारे कानो में बार-बार गुँजते है। न्याय हुआ है अन्याय हो रहा है। लेकिन यह बात कभी तक समझ में नी आई है की न्याय कौन करता है। अन्याय कौन करता है। न्याय, अन्याय है। लेकिन हमारे साथ इस संसार में कोई भी व्यक्ती न्याय नही कर सकता। अन्याय भी नही कर सकता। न्याय-अन्याय यह होता है। इसमें हमारे भाग्य के साथ हमारे कर्म भी होते है। यदि हम भाग्य से अमिर है। तो हमारे कर्म अच्छे भी न होने पर भी आगे वाला हमारे साथ न्याय ही करने की कोशिश करता है। अन्याय नही। यदि हम भाग्य से गरिब है तो आगे वाला हमारे कर्म अच्छे होने पर भी हमारे साथ अन्याय करने की कोशिश करता है। क्यों की इस न्याय अन्याय के बिच में धन की सौं उँची दिवार है। जो हमारे कर्तव्य के बिच बाँधा बनी होती है। उसी के अनुसार हमारे साथ न्याय-अन्याय होते रहता है। लेकिन हम समझदारी से अपने उपर होने वाले न्याय अन्याय को समझकर उसपर विजय याने की कोशिश धन से न करके अपनी बौद्धिक कौशलता का उपयोग करके अपने कर्म से अपने उपर होनेवाले अन्याय का प्रतिकार करके उस अन्याय को न्याय मे परिवर्तित करना चाहिए। हमें अपने कर्तव्य इस तरह से करना चाहिए की हम हमेशा अन्याय को न्याय में परिवर्तित कर सके। ना की न्याय को अन्याय में यदि हमारी सोच न्याय को अन्याय में परिवर्तित करने की होगी तो नाही हमारी भलाई होगी ना ही

दुसरों की। फिर हमारी भलाई जिस कार्य में नही है। उस कार्य को करने की हमें कोई आवश्यकता नही है। यदि किसी ने यह कार्य करने की जबरदस्ती हमारे से कि तो हम अपनी बौद्धीक कुशलता का उपयोग करके अपनी सोच के अनुसार न्याय-अन्याय का चुनाव आसानी से कर सकते है। अतः हमारा जिवन सफल बनाने के लिए हमे हमेशा न्याय को ही चुनना चाहिये अन्याय को नही।

९७) निश्चीतय X अनिश्चीत

यह निश्चित है। हम कल गाँव जाने वाले है। यह अनिश्चित है मै पास हुँगा या नही। यह घटनाक्रम हमारे सामने आते है। उनके अनुसार हम अपने वाक्य अपने मुँह से बोलने की कोशिश करते जाते है। जो कार्य हमारे हाथ में होता है। वह हम मानव के लिए निश्चित होता है। जो कार्य हमारे हाथ में नही होता। वह कार्य हम मानव के लिए अनिश्चित होता है। इसलिए हम मानव उसके अनुसार कार्य करते जाते है। निश्चित को अनिश्चित कैसे बनाये जाए और अनिश्चित को निश्चित कैसे बनाया जाए यह भी पचास प्रतिशत हमारे हाथ मे होता है। जैसे हमे गाँव जाना है। लेकिन कुछ कारण वश हम गाँव नही जा सके अनिश्चीत हो गयी वह बात हमने परिक्षा देने के लिए अच्छी पढाई की थी। अतः हमने जो परिक्षा दि है उसमें हम पास होंगे ही यह अनिश्चित बात निश्चित हो गयी। हमें किस तरह से निश्चीत

को निश्चीत में परिवर्तन करना है। अनिश्चित को निश्चित मे कैसे परिवर्तन किया जा सकता है। यह सब हमारे हाथ में है। चौबिस घंटे का एक दिन है। यह निश्चीत है। लेकिन हमारे भाग्य के चौबिस घंटे को हमने कैसे उपयोग में लाना चाहिए यह अनिश्चित है। हमे ठान लेना चाहिए कि यह चौबिस घंटे जो हमारे भाग्य के है उसे अच्छे कार्य में ही उपयोग करना है। जिससे हमारा विकास के साथ साथ दुसरों का भी विकास हो सके। निश्चित-अनिश्चित से हमारा जिवन किस तरह से बदल जाता है। यह हम सोच भी नहि सकते। यदी हमने मन में निश्चय कर लिया तो अनिश्चित कार्य को हम निश्चित कार्य मे भी परिवर्तित कर सकते है। नही तो निश्चित कार्य को हम अनिश्चित भी बना सकते है।

५८) प्रस्तुत X अप्रस्तुत

हमारे मन में जो बाते होती है वह हम कभी कभी प्रस्ततु कर लेते है। तो कभी कभी अप्रस्तुत होती है। याने अपने मन की बातों को हम प्रस्तुत नही कर पाते। हमारे मन में जो बाते होती है वह हमारे मन में होती है। तब त कवह बाते हमारी होती है। उसपर सिर्फ हमारा ही अधिकार होता है। लेकिन वह बात जब हम प्रस्तुत कर लेते है त बवह बात हमारे अधिकार से दूर हो जाती है। जिस बात से दुसरों को बुरा या अच्छा भी लग सकता है। लेकिन हमारी बाते अच्छी है तो हमे यह नही देखना चाहिए की दुसरों को

बुरा लगे या अच्छा लगे यदि हमे अपनी बाते प्रस्तुत करना है याने है ही चाहे दुसरों को अच्छा लगे या बुरा लेकिन हमे हमेशा अच्छी बाते ही प्रस्तुत करनाचाहिए। यदि कोई बुरी बात है तो उसे अप्रस्तुत करना ही हमारी समझदारी है। हमे बहोत बार अनेक बातें हमारे मन में होती है। जिन्हे अप्रस्तुत करना ही हमारी और समाज की भलाई है।

५९) कीर्तिय X अपकीर्ति

हम मानव की चाह होती है हमेशा हमारे कार्य की कीर्ति ही होना चाहिए। लेकिन हमारी चाह के अनुसार कोई कार्य नही होता बहोत बार हम कीर्ति के करिब होने पर भी हमे अपकीर्ति का सामना करना पडता है। जब हमे अपकीर्ति मिलती है तो हमें अपने कर्तव्य करने से रूकना नही चाहिए। हमेश आगे बढने की कोशिश करना चाहिए। भगवत गीता मे श्रीकृष्ण भगवान में कहा है ''अपने कर्म करो फल की अभिलाषा मत करो'' यदि हमारे कर्म अच्छे है तो हमे अपने आप कीर्ति मिल जायेगी। यदि हमारे कर्तव्य अच्छे नही है। तो अपकीर्ति अपने आप हमे प्राप्त हो जायेगी। कीर्ति-अपकीर्ति के तरफ यदि हमने नही देखा तो हम यशस्वी तो होंगे ही ऐसी आशा हम कर सकते है। कीर्ति-अपकीर्ति चाहे छोटी हो या बडी सभी का मूल्य समान ही होता है। कीर्ती छोटी होने पर उस कीर्ति में हम बढोत्तरी कर सकते है। तथा अपकीर्ति बढी होने पर उसे हम घटा भी सकते है।

बढाना घटाना हम मानव के हाथ मे है। उसे किस तरह से उपयोग कर सकते है। कीर्ति सभी मानव चाहते है। सभी मानव अपकीर्ति से डरते है। तथा दुर भागने की कोशिश करते जाते है। उन्हे ऐसा लगता है की अपकीर्ति मिलने पर हमारा जिवन दुरगम हो जायेगा। कीर्ति की चाह में मानव कितनी तो भी अपकीर्ति कर लेता है। उसे अपकीर्ति की भनक भी नही रहती। लेकिन जब उसे पता चलता है तो वह उससे कोसो दुर जा चुका होता है। अतः हमने अपने कार्य के तरफ ध्यान देना चाहिए की हमारे कार्य ऐसे ही जो दउुसरों के भलाई के लिए दी। उसमे दुसरों का नुकसान कदापी ना हो। मैने अपने विचारों से किर्ती की छोटीसी कविता लिखी है। यह इस प्रकार है।

किर्ती

कीर्ती तरे प्रकार अनेक।

जिस नाम से चाह।

मुझे वह नाम मिला।

चोरो के साथ रहा।

चोरी की कीर्ती

सज्जन के साथ रहा

सज्जन की कीर्ती

बदमाशों के साथ रहा।

बदमाशी की कीर्ती

भ्रष्टाचारी के साथ रहा।

भ्रष्टाचारी की कीर्ती।

कंजुस के साथ रहा।

कंजुसी की कीर्ती

इमानदार के साथ रहा।

इमानदारी की कीती।

मै जिस राह पर

कीर्ती उसी चाह पर।

कीर्ती तेरे प्रकार अनेक।

जिस नाम से चाह।

मुझे वह नाम मिला।

६०) चर X अचर

चर याने खाने वाला। अचर याने बिना खाने वाला। सजिव-निर्जीव में चर-अचर का ही अंतर होता है। सजिव हमेशा चर रूप में ही रकता है। उसे सजिव रहने के लिए चर रूप में रहना

ही अत्यंत आवश्यक है। लेकिन निर्जीव यह हमेशा अचर रूप में रहता है। उसे अचर रहने पर भी उसमें अनेक शक्ती होती है। जैसे लोहा यह अचर है। फिर भी हम उस लोहे से अनेक गाडिया बनाकर चला सकते है। याने चर कर सकते है। हम अचर वस्तु को चर में परिवर्तन करने के लिए उसकी अवस्था में परिवर्तीत करना होता है। एक अवस्था से दुसरी अवस्था में। जैसे पानी अचर है याने उसका ठोस रूप बर्फ लेकिन वही बर्फ जब पानी का रूपांतर कर लेता है तो वह पानी चर हो जाता है। अपने साथ कितने भी अचर को बहाकर ले जाता है। हमे पानी के समान ही अपना स्वभाव को बना लेना चाहिए । हमें चर रूप में रहकर अचर को भी अपने आप में अमाविष्ट कर लेना चाहिए। अचर यह मानव के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना चर है। यदि हम हमेशा चर रूप मे ही रहेंगे तो हमे उस चर का ठिक तरह से उपयोग नही कर सकेंगे। जैसे ज्ञान मानव चर रूप में प्राप्त कर लेता है। लेकिन उस ज्ञान को अचर रूप में रखकर उस ज्ञान का उपयोग अपने दैनंदिन जिवन में करना ही अत्यंत आवश्यक है। यदि हमने अपने ज्ञान का दैनंदिन दिन में उपयोग नही किया तो उसका दुष्परिणाम होता है।

६१) धीर X अधीर

धीर-अधीर दोनो स्वभाव वाले लोग इस संसार में है। बहोत से लोग धीर स्वभाव वाले होते है तो कुछ लोग अधीर भी

होते है। यह धीरजता-अधीरता उसके स्वभाव कार्य पर निर्भर होती है। यदि हमने कोई भी कार्य अधीरता के रूप में किया तो वह बिघडने की संभावना अधिक होती है। लेकिन वही कार्य हमने धीरजता पूर्वक किया तो उस कार्य में हम सफल हो जाते है। लेकिन सभी मानव के स्वभाव भिन्नता के कारण यह सब घटनाक्रम होते रहता है। श्रीकृष्ण भगवान के पिता-माता को अपने कर्तव्य के उपर धीरजता थी। इसलिए उन्हे कंस ने बेडियों से बांधकर करागृह में रखने पर भी वे घबराये नही। उन्होने बडे धीरजता से अपनी उपर की कठनाईयों को दुर करते गये। इसके लिए उन्हे कितने तो भी अत्याचार सहन करने पडे। फिर भी उन्होने हार नही मानी। यद वे अधीर हो जाते तो श्रीकृष्ण भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य उन्हे प्राप्त नही हो पाता । वे अपनी शक्ती को जान गये थे। इसलिए उन्होने अपनी शक्ती के अनुसार अपने कार्य को महत्व दिया। उन्होने कंस के कार्य के तरफ बिलकुल ही ध्यान नही दिया। उनकी धीरता ही उनके विजय का प्रमुख कारण थी। हमे कठिन से कठिनसमय में भी अपनी धीरता नही खोनी चाहिए। अधीरता यह असफलता की निशानी है। हमे अधीरता से नही तो धीरता से अपनी बुद्धमता से सही उपयोग करना चाहिए। यदि हमने धीरता सभी कार्य मे दिखा दि तो हमे सफल होने के लिए कोई रोख नही सकता। लेकिन हमने यदि अधिरता दिखायी तो हमारे कार्य के उपर हँसने वालों की हमी नही है। यह जमाना भी अनोखा है। इस जमाने मे रहने वाले लोग भी अनोखे तथा उनका स्वभाव भी अनोखा है।

इस स्वभाव को हमने पहचानकर अपने हार को जित में बदल देना ही समझदारी है।

६२) प्रिय X अप्रिय

मानव जिवन में प्रिय-अप्रिय यह उसके स्वभाव के अनुसार पैसे के अनुसार कार्य के अनुसार तथा आयु के अनुसार जात-लिंग के अनुसार तथा उसकी सुंदरता और उसके कार्य के अनुसार होता है। व्यक्ती यदि बुद्धिमान है। लेकिन उसकी बुद्धिमता के कारण बहोत कम लोग प्रिय होते है। उससे अधिक प्रिय तो पैसे वाला व्यक्ती हो जाता है। चाहे उसके पास पैसे अधिक है। लेकिन बुद्धीमता कम होने पर भी लोग उसे चाहते है। क्यों की उसमें बुद्धीमता की अपेक्षा पैसा श्रेष्ठ हो जाता है। प्रिय-अप्रिय हमेशा व्यक्ती बाहरी सजावट को देखकर उसे प्रिय बना लेता है। तथा अंदर की सजावट के उपर उसका ध्यान नही जाता है। जैसे घर बाहरी सजावट से सुंदर दिखायी देता है। लेकिन अंदर से वह कमजोर होने पर भी लोग उसकी सुंदरता देखकर खुश हो जाते है। लेकिन उसके पडोस में दुसरा घर यह मजबूत होने पर भी उसकी सुंदरता के तरफ लोग नही देखते। उसे दुखरे घर से कम दर्जा देते है। क्यो की वह घर उस घर से उपरी तौर पर उतना सुंदर नही है। उसी तरह से मानव यदि रंग-रूप में सुंदर है। यदि उसमें कुछ गुण भी कम है। तो उसके रंग-रूप के कारण उसके अवगुण भी छुप जाते है। लेकिन यदि कोई व्यक्ती गुणवान

है लेकिन रंग रूप में साँवला है तो उसके गुणों को वह साँवला रंग छुपा देता है। जिससे गोरा आदमी प्रिय लगता है। साँवला आदमी अप्रिय लगता है। यह अप्रिय होने पर भी अपनी लगन मेहनत से वह प्रिय बन सकता है। लेकिन उसके लिए उसे कडी मेहनत करनी होती है। जो व्यक्ती कडी मेहनत कर लेता है वह साँवला होने पर भी अपनी मेहनत के बल पर प्रिय हो जाता है।

६३) भद्र X अभद्र

भद्र-अभद्र याने इसका अर्थ तो आप समझ ही लिये होंगे। कोई वस्तु हमारे सामने भद्र रूप में प्रगट होती है। तो कोई वस्तु हमारे सामने अभद्र रूप में प्रगट होती है। जैसा कोयला यह काला रंग को होने के कारण हम उसे भद्र कहते है। लेकिन उसी खदान में से हिरा यह चमकिला होने के कारण अभद्र कहलाता है। हिरा यह अपनी सुंदरता के लिए ही प्रसिद्ध है। लेकिन कोयला यह काला होने पर उसके अनेक उपयोग मानव अपने जिवन की सफलता के लिए कर लेता है। फिर भी हमारे सामने यदि कोयला और हीरा दोनो रखे होगे तो हम मानव के स्वभाव अनुसार हीरा को ही पसंद करेंगे। हमें याद होने पर भी की हीरा की अपेक्षा कोयला काम का है।

६४) भाग्यवान X अभागा

बोलचाल की भाष में हम अक्सर बोलते है। यह जन्म से भाग्यवान है। यह जन्म से अभागा है। भाग्यवान-अभागा होना यह हमारे हाथ में नही है। हमारा जन्म जिस स्थान पर होता है यह ईश्वर की शक्ती ईच्छा से होता है। जो हमारे कर्म के अनुसार हमें जन्म देता है। लेकिन यदि हम अभागे है तो अपने कर्म से अभागे भाग्य को भाग्यवान में परिवर्तित कर सकते है। यदि हम भाग्यवान करके जन्म लिया है। तो अबपने कर्म यदि हमने अच्छे से नही किया तो अभागे रूप में हमारे भाग्य परिवर्तन को देर नही लगेगी। भाग्यवान से अभागा बनने में कुछ ही क्षण मानव के लिए आवश्यक होता है। लेकिन अभागेसे भाग्यवान बनने के लिए उसे वर्षो तपस्या करनी होती है। जब उसकी भाग्यवान बनने की तपस्या पूर्ण हो जाती है।

६५) यश X अपयश

हमे इस कार्य में यश चाहिए। भगवान ऐसी प्रार्थना हम भगवान अल्ला से करते है। हम हमेशा यश के लिए ही भावना, अल्ला से प्रार्थना करते है। फिर भी कभी कभी यश हमारे हाथ में लग जाता है। तो कभी अपयश को हमें स्वीकार कर लेना होता है। जब हमारे हाथ में यश आता है तब हम अत्याधिक ख़ुश हो जाते है। लेकिन अपयश आने पर अत्याधिक दु:खी भी हो जाते है। ऐसी

स्थितीमे बहोत से लोग अपनी जान भी गवा देते है। अपयश के कारण अतः उन्हे अपयश पर यश पाना नही आता। वे इसलिए अपनी जिंदगी से हार मान लेते है। लेकिन जो व्यक्ती अपयश बार-बार जिवन में आने पर भी वह जिंदगी से हार न मानकर हमेशा प्रयत्न करते रहता है। तब यश को उसके चरण चुमने ही पडते है। एक दिन वह इतना यशस्वी हो जाता है की इसकी अपेक्षा भी वह नही कर सकता।

६६) रूचिकर X अरूचिकर

हमें यह भोजन रूचिकर लग रहा है। हमें यह भोजन अरूचिकर लग रहा है। भोजन के अनुसार हमे किसी विषय में रूची होती है। तो किसी विषय में रूची नही होती है। जैसे किसी विद्यार्थी को गणित विषय में रूची है तो किसी को हिंदी विषय में रूची है। कोई कपडे रंगी-बेरंगी पहनने में रूची रखता है। तो कोई खाना स्वादिष्ट खाने में रूची रखता है। तो कोई ज्ञान प्राप्त करने का रूचिकर होता है। तो कोई समय बरबाद करने का रूचिकर होता है। सभी की रूचि जैसे होती है। उसी तरह से अरूचिकर भी होता है। जैसे गणित में रूचि होने पर उसे हिंदी विषय में रूचि नहि होती। सभी के स्वभाव के अनुसार वह रूचिकर - अरूचिकर होता है। हमें जिस विषय में रूचि है वह रूचि अगले वाले व्यक्ती में भी होगी यह जरूरी नही है। अगला व्यक्ती उस विषय में अरूचिकर भी हो सकता है।

६७) विवाहित X अविवाहित

हम मानव जिवन में विवाहित-अविवाहित का अत्यंत महत्व है। हमारा जन्म होने के बाद हमारे शारिरिक, मानसिक, भावनिक विकास के बाद हम उस उम्र तक बढ जाने के बाद अविवाहित ही हम रहते है। लेकिन हमारी योग्य उम्र हो जाने पर हमे विवाहित होना होता है। उस अविवाहित जिवन और विवाहित जिवन में बहोत बडा अंतर निर्माण हो जाता है। चाहे स्त्री हो या पुरूष दोनो का जिवन परिवर्तन हो जाता है। अविवाहित में जितनी जिम्मेदारी होनी चाहिए उतनी नही रहती। लेकिन विवाहित में वह जिम्मेदारी दोगूनी बढ जाती है। हमे यदी स्त्री है तो दुसरे के घर में आकर दुसरे के घर को अपना बनाकर उनके परिवार वाले को अपना बनाकर विवाहित जिवन की शुरूवात करते करते जिंदगी में कितने तोभी उँच-निच आ जाता है। उस उँच-निचता का सामना करते हुये आगे बढते जाना होता है। लेकिन अविवाहित में हम जहाँ जन्म लेते है उसी परिवेश में हमे रहना होता है। उसी तरह से पुरूष को भी दुसरे परिवार के साथ जुडकर उससे अपने वैचारिक जानकारी प्राप्त करके अपने ग्यान में वृद्धी करते जाता है।

६८) वैध X अवैध

यह कानुन वैध है तो यह कानुन अवैध है। यह हम हमेशा कहते है। अपने वैध कानुन का अपमान करके अपराधी बन गये है। तथा अवैधता का उपयोग किया है। इसलिए हम मानव को बहोत बार सजा भी होती है। वह सजा छोटे रूप में तो कभी बडे रूप में भी प्राप्त होती है। जब हम उस कानुन का अवैध रूप में भी उपयोग नही करने पर भी उसकी सजा कर्मे भूगतना पडता है। बहोर बार अपराधी यह खुले आम घुमता है तो निरपराधी व्यक्ती उसकी सजा पूर्ण करता है। वैध कानून यह सभी के लिए होता है लेकिन बहोत से लोग इस वैध कानुन का उनके अधिकार मे होने के कारण उसका दुरूप्योग भी करते जाते है। हमे वैध कानुन का आदर करना चाहिए। हमारे उपर कितने भी अत्याचार क्यों ना हो लेकिन हमे अवैध मार्ग पर न चलकर हमेशा वैध मार्ग पर चलने की कोशिश करना चाहिए। वैध के मार्ग पर चलने पर हमे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। लेकिन भगवान के घर देर है अंधेर नही है। इस वाक्य को यदि हमने ध्यान में रखा तो हमवै ध के मार्ग पर चलकर भगवान को भी वैध के आगे झुकाने के लिए सफल हो सकते है। इसके लिए हमे सिर्फ सत्य और प्यार की ही आवश्यकता होती है। जो व्यक्ती सत्य और प्यार के मार्ग पर चलता है उसे वैध के मार्ग पर चलने के लिए कोई रोक नही सकता। लेकिन जो सजा के डर से अवैध को अपना लेता है। तो स्वयम भगवान ही उसके रास्तों में कांटे बनकर उसे इस तरह से

नष्ट करता है की उसे पता भी नही चलता की उसका विनाश हो रहा है। वह अपने विनाश की कल्पना भी नही कर सकता। जो व्यक्ती वैध के मार्ग पर चलता है। वह हार कर भी जित जाता है।

६९) शिष्ट X अशिष्ट

हम दुसरों के साथ शिष्टता तथा अशिष्टता पूर्ण व्यवहार करते है। दुसरे भी हमारे साथ शिष्टता-अशिष्टता पूर्ण व्यवहार करते जाते है। यह सभी शिष्टता-अशिष्टता यह समाज की धारणा है। सभी व्यक्ती यह शिष्टता चाहता है। लेकिन अशिष्टता हमारे से कोसो दुर जाने लगती है। लेकिन हम दुसरों के साथ शिष्टता का व्यवहार चाहते है। लेकिन हम कभी-कभी अशिष्टता का व्यवहार करते जाते है। हमे मालूम है। यह व्यवहार अशिष्टतापुर्ण है। फिर भी दुसरों को गिराने के लिए हम अशिष्टतापूर्ण व्यवहार कर लेते है। हमें ऐसा करते समय जरा भी सोचते नही की सामने वाले के दिल पर क्या गुजर रही होगी। लेकिन हम इतने समझदार है तो हमे हमेशा इतना ध्यान में रखना है की हमें शिष्टतापूर्ण ही व्यवहार करना है। अशिष्टतापूर्ण व्यवहार नही। यदि हमने अशिष्टतापूर्ण व्यवहार की जिससे दुसरों का नुकसान हुआ है तो हमारा म नही हमारा दुश्मन बन जाता है। हमारा मन हमें धिक्कारता है तो हमने कैसा व्यवहार करना चाहिए। हमने हमेशा अच्छा ही व्यवहार करने की कोशिश करना चाहिए।

७०) शुद्ध X अशुद्ध

हमें प्रकृति से अनेक प्रकार की वस्तुएँ शुद्ध रूप में तथा अशुद्ध रूप में दोनो रूपों में प्राप्त होती है। जब हमारे को प्राकृतिक वस्तुएँ शुद्ध-अशुद्ध रूप में प्राप्त होती है। तो हमारे मन भी प्राकृतिक होने के कारण कभी हमारा मन शुद्ध होता है। तो कभी अशुद्ध होता है। हमे अपना मन शुद्ध रखना है या अशुद्ध रखना है यह हमारे मन की सोच है। यदी हमने अपना मन शुद्ध रखा तो हमारे कार्य भी कृति शुद्ध ही होगी। यदि हमारा मन अशुद्ध है तो हमारी कृती, कार्य भी अशुद्ध होंगे। हमारे मन में क्या चल रहा है यह हमारी कृती स्पष्ट रूप से हमारी शुद्धता, अशुद्धता बता देती है। इसके लिए हमे किसी गवाह या पैसा या कोई व्यक्ती की सिफारश की आवश्यकता नही है। हमारी कृती जैसी होगी उसके उपर हमारे मन की शुद्धता अशुद्धता निर्भर होगी। हमे शुद्धता को ही अपने जिवन का अभिन्न अंग बना लेना चाहिए। तथा उसी के अनुसार जिवन जिने की ठान लेना चाहिए।

७१) सर्वज्ञ X अल्पज्ञ

सर्वज्ञ याने संपूर्णतः अल्पज्ञ याने थोडासा। हमे जो दवा प्रकृति से प्राप्त हो रही है। वह दवा सर्व है। जो सभी प्राणी को समन रूप से प्राप्त हुयी है। जो व्यक्ती अच्छा कर्म करता है जो व्यक्ती अच्छा कर्म नही करता उसे भी दवा सर्वज्ञ रूप में प्राप्त हो

जाती है। लेकिन यदि हमे गर्मी होती है तो गर्मी दुर करने के लिए हमे जो विद्युत का पंखा लगाते है। तो ऐसी स्थिति मे वह हवा हमे अल्पज्ञ रूप में ही प्राप्त होती है। जैसे ही बिजली चले जाती है वैसे ही दवा भी चले जाती है। हमे सर्वज्ञ दवा ग्रहण करतना चाहिए । लेकिन अल्पज्ञ हवा यह बिजली पर निर्भर होने के कारण इसका आदी होना यह हमारी सेहत के लिए हानीकारक है। अतः हमे अल्पज्ञ हवा जितना आवश्यक है उतनी ही ग्रहण कर लेना चाहिए। हमारे जिवन में बहोत सी वस्तुए सर्वज्ञ रूप में प्राप्त होती है। तो दुसरे रूप मे कुछ वस्तुए अल्पज्ञ रूप में भी प्राप्त हो जाती है। हमे अपने आप में परिवर्तन करके सर्वज्ञ को अल्पज्ञ मे नही बदलना चाहिए। अल्पज्ञ को सर्वज्ञ में परिवर्तित नही करना चाहिए। जो वस्तु हमारे पास है । यदि पैसा हमारे पास है यदि पैसा हमारे पास सर्वज्ञ रूप में है उसे हम बढाने की अपेक्षा घटाते ही जायेंगे। तो वह एक दिन अल्पज्ञ हो जाएगा। लेकिन ज्ञान यह अल्पज्ञ है तो उसमे हम बढोत्तरी करते जायेंगे तो वह सर्वज्ञ होते जायेगा। धन यह बाँटने पर सर्वज्ञ से अल्पज्ञ हो सकता है। लेकिन ज्ञान यह बाँटने पर अल्पज्ञ से सर्वज्ञ होगा। यह हममानव ने समझकर अपना जिवन जिना चाहिए।

७२) भक्ष्य X अभक्ष्य

भक्ष्य याने मांसाहारी अभक्ष्य याने शाकाहारी । इस संसार में मांसाहारी और शाकाहारी दोनो प्रकार के प्राणी पाये

जाते है। जैसे शेर भक्ष्य है। तो हिरण अभक्ष्य लेकिन दोनो के जिवन में जमिन आसमान का अंतर है। जब शेर मैदान में होता है। तो किसी दुसरे प्राणी की हिम्मत नही होती मैदान मे रहने की। लेकिन हिरण मैदान मे होती है तो हिरण के साथ दुसरे प्राणी भी जिवन जि लेते है। लेकिन यह तो प्राणी है। इनसे कुछ ना कुछ बोध तो लेना ही चाहिए। हमे भक्ष्य-अभक्ष्य यह प्राकृतिक नियम के अनुसार है। लेकिन हम मानव ने अपनी सोच के अनुसार भक्ष्य-अभक्ष्य का निर्माण कर लिया है। जैसे आज भ्रष्टाचार यह भक्ष्य के रूप में हमारी नैतिकता का कलंक बना दुआ है। अतः यह कलंक हम मानव को भक्ष्य बनाकर ऐसा खा रहा है। जिसका शिकार हम सभी मानव प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में बनते जा रहे है। लेकिन शेर के जैसे बहादुर बनकर इस भ्रष्टाचारी राक्षस को खाने की हिम्मत नही जुटा पा रहे है। क्यों की यदि शेर बन गये तो बेचारे हिरणों का क्या होगा । जो अभक्ष्य बनकर यह अत्याचार चुपचाप सहन कर अपना जिवन व्यापन कर रहे है। इस पृथ्वी पर भगवान ने भक्ष्य-अभक्ष्य दोनो प्राणीयों का निर्माण किया है। कोई प्राणीयों को खाकर अपना जिवन जिता है। तो कोई घास-फुस खाकर अपना जिवन जिता है। यह मानव जिवन में अत्यंत आवश्यक है।

७३) भाव X अभाव

मानव स्वभाव होता है। हमे भाव मिलना चाहिए। हर व्यक्ती ने हमारे मन के अनुसार कार्य करना चाहिए। हमारे मन की आवाज से सभी क्राणी झुकना चाहिए। या भाव किसी को कुर्सी, पैसा, जन्म, सुंदरता के गुण होने पर प्राप्त होता है। जो कुर्सी पर है। उस कुर्सी का आदर करके उस व्यक्ती के विचारों को भाव दिया जाता है। फिर वह भाव मानव के लिए कल्याणकारी हो या नही हो जिसे पास पैसा है। उस व्यक्ती के पैसे के तरफ झुककर उसे भाव दिया जाता है। वह अपने पैसे के बदल पर दुसरों को दबाकर भाव प्रयत्न कर लेता है। जन्म से यदि वह घर मेब डा है। वो उसे भाव छोटो द्वारा दिया जाता है। किसी व्यक्ती की सुंदरता के कारणलोग उसमे प्रसन्न होकर उसे भाव देते है। लेकिन हम सबसे अलग भाव जो व्यक्ती में बुद्धीमत्ता होती । सदा व्यक्ती का भाव अलग ही होता है। उसे पहले अभाव मिलता है। लेकिन उसके विद्धवता की पहचान बाह में होती है। जो अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सभी मानव प्राणी को अपने ताक आकृष्ट कर लेती है। आप देखो जितने भी महापुराण हुये भवनमें से सुंदरता, पैसा, कुर्सी, बडप्पन आके पास इन सब बातों का अभाव होने पर भी सिर्फ एक ही बात थी। वह उनकी बुद्धीमता उनकी अलौकिक बुद्धीमता की उनके भाव का कारण बनकर आज भी संसार उन्हे भाव दे रहा है। उदा: अमेरिका के बार्टिंग लिंकन।

७४) मंगल X अमंगल

हमे सब का मंगल होना चाहिए। अमंगल किसी भी प्राणी का नही होना चाहिए। ऐसा हम सोचते है। लेकिन मंगल-अमंगल यह हमारे कर्म पर निर्भरी है। यदि हमें अपना मंगल चाहिए। तो कर्म अच्छे से करना होगा। यदि हमारे कर्म अमंगल है। तो हमारे जिवन का अमंगल होने से कोई रोक नही सकता। मानव जिवन में हमे किस तरह का कार्य करना चाहिए। किस तरह के कार्य नही करना चाहिए। जैसे हम कब खाते है तो हमारे शरिरके लिए अचछा होता है। लेकिन हम फल के जगह उसी फल की शराब पिते है। तो हमारे शरिर के लिए अमंगल थे। हमे मंगल कार्य करने पर हमारे जिवन काभी मंगल होता है। हमे समाज के लिए अच्छा कार्य करते है। तो हमारा भी मंगल होगा। यदि हम समाज के लिए बुरा कार्य करते है तो हमारा भी मंगल होगा। यदि हम समाज के लिए पुरा कार्य करते है। तो हमारा भी अमंगल होगा। हमारा जिवन मंगलमय होगा। या अमंगलमय यह हमारे हाथ मे है।

७५) वरदान X अभिशाप

हम हमेशा भगवान से वरदान मांगते है। भगवान हमे इस कार्य मे यश दो। यह कार्य सिद्ध हो जाने दो। हमे वरदान चाहिए। कार्य चाहे अच्छे हो या बुरे हम भगवान से वरदान मांगते

है। आप नाटकों में देखे होगे की भगवान जो बडे भगवानों से वरदान माँगते थे। वे लोगों के कल्याण के लिए होता था। लेकिन राक्षस यह भगवान से वरदान माँगते थे । वे लोगों के लिए वह वरदान अभिशाप होता था। उस वरदान अभिशाप होता था। उस वरदान को देने के बाद स्वयम् भगवान भी आफत में पड जाते थे। उसी तरह से हम यदि दुसरो के साथ अच्छा व्यवहार करते है। तो वह एक वरदान होता है। लेकिन वही व्यक्ती उस व्यवहार का बदला हमारे से अभिशाप के रूप मे करता है। तो जिसका नतिजा बुरा होता है। वरदान अभिशाप जिस प्रकार विरूद्ध शब्द है। उसी प्रकार मानव जिवन पर भी इसका विरूद्ध शब्द है। उसी प्रकार मानव जिवन परभी इसका विरूद्ध प्रभाव पडता है।

७६) शकुन X अपशकुन

कोई काम से घर के बाहर जाते समय भरा पानी घडा दिखना शकुन है। तो बिल्ली का रास्ता काटना अपशकुन माना जाता है। यह हम मानव की धारणा है। हमे यह शकुन है। तो यह अपशकुन है। लेकिन यदि हमने कर्म ही नहि किये तो उसमे शकुन-अपशकुन का क्या अर्थ है। विधवा स्त्री को समाज में अपशकुन माना जाता है। क्या स्त्री विधवा होने पर अपशकुनी हो जाती है। लेकिन पुरूष विधुर होने पर अपशकुनी नही हो जाता। पुरूष यह शकुन है। उसकी तुरंत दुसरी शादी कर लि जाती है। तो स्त्री को अपशकुन माना जाता है। यह कहाँ की निती है।

शकुन-अपशकुन यह हमारी सोच के अनुसार है। हमने ठान लिया तो वह शकुन है। नही ठान लिया तो अपशकुन है। हमारे जिवन मे क्या शकुन है। क्या अपशकुन है यह हमने तय करना है।

७७) सभ्य X असभ्य

हमें जबसे साथ सभ्यता पूर्वक व्यवहार करना चाहिए। असभ्यतापूर्वक व्यवहार यह अशिक्षीत की निशानी है। लेकिन सभ्यता पूर्ण व्यवहार करने पर हमे उससे असभ्य व्यवहार मिलता है। तो इसका क्या? यदि हमारे साथ कोई असभ्य पूर्ण व्यवहार करता है तो हमे उसकी गुस्सा आता है। लेकिन हम दुसरों के साथ असभ्य व्यवहार करते है तो उसके उपर क्या बितती होगी इसकी हम कल्पना भी नही करते। हमे हमेशा सभ्य पूर्वक रहकर दुसरों के साथ सभ्य ही व्यवहार करने से हमारे लिए हमेशा अच्छा ही है। वह हमारे हित में है। उसके लिए हमे झुठ का सहारा नही लेना पडता। यदि हमस असभ्य व्यवहार करते है तो हमे हमेशा सत्य की राह पर चलकर ही कार्य करना होता है। लेकिन यदी हम असभ्य व्यवहार करते है तो हमें झुठ का सहरा लेना पडता है। जो हमारे लिए भी बुरा है। तथा दुसरों के लिए भी बुरा है।

७८) स्थायी X अस्थायी

हमें आँखो से दिशायी देनेवाली वस्तु यह स्थायी या अस्थायी दोनो रूपों में पायी जाती है। जैसे यह टेबल स्थायी रूप में है। याने एक ही जगह है। लेकिन यदि इसे शक्ती लगाकर दुसरे जगह जब तक हम लेकर नही जाते वह उसी स्थान पर स्थायी हो जाता है। लेकिन हमें बहोत सी वस्तुएँ अस्थायी रूप मे भी प्राप्त होती है। पैसे, पानी, दुध यह यदि हमने एक बर्तन मे नही रखा तो यह बहते जाता है और अस्थायी हो जाता है। दोनो वस्तुए निर्जिव है। लेकिन दोनो में कितना जमिन-आसमान का अंतर है। यह आप देख सकते है। उसी तरह से मानव का शरिर स्थायी है। इसमे समय के अनुसार ही परिवर्तन के अनुसार होता है। लेकिन मन यह अस्थायी है। वह हमेशा भटकते रहता है। मानव का शरिर स्थायी है। लेकिन उसका मन उसके पास होने पर भी अस्थायी है। वह हमेशा भटकते जाने के कारण मानव को अपने मन के अनुसार कार्य करना होता है।मानव अपने मन को अपने वंश में कर सकता है। लेकिन उसे स्थायी नही बना सकता।

७९) सुघड X अनगढ

यह काम सुघड हुआ है। यह काम अनगढ है। ऐसा बोलचाल की भाषा में हम हमेशा कहते जाते है। क्या सुघड है। क्या अनगढ यह हमारी कार्य प्रणाली पर निर्भर है। हम मानव के

लिए कोई भी कार्य सुघड या कोई भी कार्य अनगढ नही है। यदि शुरूवा तमे हमें जो कार्य अनगढ लग रहा है। वह हमारे प्रयत्न से धिरे-धिरे सुघड हो जायेगा। जैसे बच्चे को चलने में वह कितने तो भी बार गिर जाता है। लेकिन बाद मे वही चलना अनगढ की जगह सुघड लगने लगता है। वह जल्दी-जल्दी चलना दिख जाता है। उसी तरह मै जैसे हमे खाना लगाना पहले अनगढ लगता है की हम कैसे खाना बनायेंगे। लेकिन यदि हमने सराव कर लिया तो वही खाना हमस ुघड तरिके से बना सकते है। हम मानव जिवन में कोई भी कार्य की शुरूवात अनगढ रूप मे ही होती है। लेकिन सराव से वह कार्य धिरे-धिरे सुघड होते जाता है। उसमें एक सुघडता आ जाती है। यदि कोई कार्य हमे अनगढ लगे तो उसे छोड नही देना चाहिए। उसमें धिरे-धिरे परिवर्तन करके कठिन कार्य को प्राप्त करते जाना चाहिए। यदि हमने अपनी कार्यप्रणाली को उसी तरह से रखा तो एक दिन अनगढ काम में भ हमस ुघड हो जायेंगे।

८०) हित X अहित

हमें अपना हित है। दुसरो का भी हित हमें रखना है। हित रखने से हमें हित से लाभ ही मिलता है। यदि हमने दुसरो का अहित रखा तो हमारा भी अहित हो जायेगा। हित-अहित यह हमारे स्वभाव के उपर है। हमे दुसरों का हित नही रख सकते तो अहित भी नही कर सकते। ऐसा लगता है। अकेला मानव है तो

क्या हम उसका अहित कर लेंगे। लेकिन हित-अहित यह भगवान के हाथ में है। मानव को कष्ट जबर होता है। जो मानव सत्यवादी होता है। असत्यवादी मानव के दृष्ट कार्य के कारण लेकिन दृष्ट असत्यवादी मानव दुसरो का नुकसान नही कर सकता। वह सिर्फ तकलिफ दे सकता है। हित-अहित तो यह भगवान की मर्जी पर ही होता है। विधाता के न्याय के आगे मानव का न्याय कुछ भी नही है। उसकी न्याय प्रियता बहोत ही अलग होती है। विदाता जो न्याय देता है। वह अनोखा होता है उसके फैसले देर से होते है। लेकिन काम के होते है। उसके फैसले के आगे सभी को झुकना ही पडता है।

८१) ज्ञानी X अज्ञानी

हस संसार में ज्ञानी लोग भी है तथा अज्ञानी लोग भी है। लेकिन ज्ञानी लोगों का ज्ञान अज्ञानी लोगों के आगे पैसे के कारण छुप जाता है। अज्ञानी लोगों के पास पैसा होने पर वे अपने आप को ज्ञानी समझते है। तथा उन्हे ज्ञानी लोगों का ज्ञान उन्हे पसंत नही आता। वे उसे छुपाने की कोशिश करते जाता है। लेकिन यदि जो व्यक्ती सचमुछ ही ज्ञानी है वह अज्ञानी व्यक्ती के अत्याचार सहन कर लेता है। लेकिन उसके पैसे के आगे झुकता नही है। उसे अपने ज्ञानी पर विश्वास होता है। उसे मालुम होता है की उसका ज्ञान संपूर्ण विश्व में एक दिन अवश्य ही उजागरता फैलाने की कोशिश अवश्य करेगा। वह अपने ज्ञान को फैलाने के

लिए एक सिढी गिरता पडता है। फिर भी उठकर फिर से सिढीयाँ चढने की कोशिशकरते जाता है। वह एक दिन ज्ञान की सभी सिढियाँ अपने आप चढकर लोगों के सामने ज्ञान का प्रकाश फैलाते जाता है। उसे वह प्रकाश स्वयंम भगवान ने दिया है। हमारे कितने तो भी वैज्ञानिक जिन्होने अपने ज्ञान को अपने पास न रखकर समाज की भलाई के लिए ही खर्च किया है। उन्हे गुजरे हुये कितने तो भी वर्ष हो गये। लेकिन उनका ज्ञान यह आज भी समय के साथ आशिर्वाद के रूप मे हमारे साथ में है। जो आज हम उतनी तरक्की कर चुके है।

८२) स्वास्थ्य X अस्वास्थ्य

आप के कानों मं हमेशा यह शब्द सुनायी पडते होंगे। मै स्वास्थ्य हुँ। मै अस्वस्थ हुँ। लेकिन स्वास्थ्य का और अस्वास्थ्य क्या ? यह मानव जिवन एक मशिन के समान होने के कारण यह मशिन शारिरिक, मानसिक, भावनिक रूप से कभी स्वस्थ रहती है। तो कभी अस्वस्थ। हमारे मानव जिवन यह अनेक परिस्थितियों से गुजरना पडता है। उस परिस्थिती पर विजय पाना हमे अत्यंत आवश्यक होता है। इस स्थिती में हमारे साथ यदि कोई दुघटना हो जाती है तो हमारा शरिर तो स्वस्थ रहता है। लेकिन हमारा मानसिक संतुलन बिघड जाने के कारण हमारा शारिरिक, मानसिक, भावनिक संतुलन खो जाता है। मानव यह मानसिक स्वास्थ्य तभी रह सकता है। जब उसका शारिरिक

स्वास्थ्य अच्छा होता है। कहा जाता है Sound mind in a Sound Body शरिर स्वास्थ्य तो मन भी स्वास्थ्य। अतः हमे अपने शरिर को स्वस्थ रखना अत्यंत आवश्यक है। पौष्टीक आहार, व्यायाम, शारिरिक कार्य आज इस कॉम्प्युटर के युग मे लोग शारिरिक कार्य की अपेक्षा मानसिक कार्य मे अधिक प्रमाण में जुडे हुये है। उन्हे मानसिक कार्य याने मोबाईल से खेलना कॉम्प्युटर से खेलना, टि.व्ही. देखना जिससे शारिरिक कार्य कम और मानसिक कार्य अधिक प्रमाण्ण में होने से हमारे शरिर पर उसका बुरा असर हो सकता है। यह मानसिकता आज के युग में बदलना आवश्यक है। लेकिन हमारी मानसिकता गलत कार्य के और जा रही है। यानी हमारा अस्वास्थ शरिर के जिम्मेदारी हम स्वयम ही बनते जा रहे है। शरिर के लिए वातावरण भी स्वस्थ होना आवश्यक होता है। लेकिन आज हमारा वातावरण दिनो-दिन अशुद्ध होते जा रहा है। जिससे अशुद्ध वातावरण में हमारा शरिर शुद्ध याने स्वास्थ्य कैसे रह सकता है। स्वस्थ-अस्वस्थ यह दोनो अवस्था हमारे सामने है। हम अपने शरिर मन को स्वास्थ्य रखे या अस्वस्थ यह हमारे हाथ मे है। तथा हम अपने शरिर मन दोनों को स्वास्थ्य रखने पर ही जिवन मे विजयी बन सकते है। यदि हमने अपने शरिर मन को अस्वस्थ रखा तो हमारा जिवन भी अस्वस्थ हो जायेगा। हम जो कार्य करते है। उसके अनुसार हमारा शरिर, मन बन जाता है। हमारे

कार्यप्रणाली पर हमारा शरिर, मन हमें सवस्थ, अस्वास्थ का साथ देते रहते है।

८३) स्वाभाविक X अस्वाभाविक

स्वाभाविक यह बात है। यह बात अस्वाभाविक है। ऐसा हम बोलचाल की भाषा मे उपयोग करते है। क्या स्वाभाविक है और क्या अस्वाभाविक है। यह हम मानव कभी पहचान पाते है। तो कभी पहचानने में गलति कर बैठते है। हमारी आँख, कान, सोच होने पर भी जो बात स्वाभाविक है। उस बात को दुसरे के बातों में आकर अस्वाभाविक कर देते है। हमे ऐसा लगता है की स्वाभाविक बात को अस्वाभाविक में परिवर्तन करने से वह बात छुप जायेगी। लेकिन सत्य बात को कोई छुपा नही सकता। सत्य यह स्वाभाविक होकर वह समाज के सामने आता ही है। चाहे वह उसकी कलावधी देर से क्यों ना हो। सत्य की कालावधी हमेशा देर से ही होती है। उसे पहचानना साधारण मानव बस मे नही होता। जो अस्वाभावीक होते है। उन्हे स्वाभाविक वाले लोगों से एक प्रकार की घृणा होती है। उनकी घृणा उन्हे अस्वाभाविक बना देती है। अतः हम मानव के जिवन में स्वाभाविक-अस्वाभाविक का अत्यंत महत्व है।

८४) स्थिर X अस्थिर

स्थिर वस्तु है। यह अस्थिर वस्तु है। जैसे कोई ठोस वस्तु स्थिर है। याने द्रव्य है तो अस्थिर है। जैसे पानी अस्थिर वस्तु है। उसी तरह से मानव का मन भी स्थिर-अस्थिर होता है। हमारा मन स्थिर रखना है। या अस्थिर रखना है। यह हमारे सोच पर निर्भर करता है। हम चाहे तो अपना मन स्थिर भी रख सकते है। अस्थिर भी रख सकते है। हमारा मन अस्थिर इसलिये हो जाता है की हम दुसरों को अपने से बडा देखना पसंत नही करते। इसलिए हमारा मन अस्थिर हो जाता है। मन के लालच के कारण भी मन अस्थिर होते जाता है। जिससे हमारा मन अस्थिर होते जाता है। यदि हमने गाडी चलाते समय स्थिर नहि हुये तो अस्थिरता के कारण हमारे गाडी का ब्रेक हमारे हाथों से निकलकर हमारी दुघटना भी हो सकती है। गाडी के ब्रेक के समान ही अपने जिवन में स्थिरता होना अत्यंत आवश्यक है। यदि हमने जिवन में स्थिरता न रखकर अस्थिरता को अपना लिया है। स्थिर यह अस्थिर हमारे जिवन में अत्यंत आवश्यक है। हमें जिवन जिते समय स्थिरता भी धारण करना होता है। और अस्थिरता को भी अपनाना होता है। दोनो मिलकर यदि हमने जिवन जिया उसका सही उपयोग किया तो हम जिवन में एक दिन अवश्य ही सफल हो जायेंगे।

८५) नास्तिक X आस्तिक

नास्तिक याने भगवान को न मानने वाला। आस्तिक याने भगवान को मानने वाला। इस संसार में भगवान को मानने वाले और न मानने वाले दोनो प्रकार के लोग है। जो नास्तिक होते है। उनकी धारणा भगवान की पुजा-पाठ की नही होती। लेकिन ऐसा नही की वे शुद्ध अंतःकरण के नही होते। जो नास्तिक होते है। उनमें भी अधिकतर लोग शुद्ध अंतकरण वाले होते है। लेकिन जो आस्तिक होते है भगवान में विश्वास करते है उनमे बहोत से लोग मन में कपट रखकर भगवान की अर्चना करते है। उनके मन में कुछ होता है। तथा बाहरी रूप से कुछ बोलते है। भगवान की अर्चना करने का ढोंग भी करते है। लेकिन बहोत से लोग भगवान की पुजा-अर्चना भी करते है। शुद्ध अंतकरण वाले भी होते है। जो व्यक्ती शुद्ध अंतकरण वाले होते है वो सारे अर्थ में आस्थिक है। लेकिन जो शुद्ध अंतकरणा वाले नहि होते वे सहि अर्थ में नास्तिक होते है। भगवान की पुजा अर्चना का दिखावा करो चाहे मत करो। इससे कुछ भगवान को अर्चना नही होगी। भगवान का कहना है की मेरी पुजा अर्चना यह शुद्ध अंतरकरण से करो। मुझे फुल, बाँती, अगरबत्ती तथा अन्य आंडबर की आवश्यकता नही है। तो सिर्फ शुद्ध अंतकरण चाहिए। मेरी दृष्टी में तो वही आस्तिक है । जिसका अंतकरण शुद्ध नही है वह नास्तिक है। यह संसार एक शुद्ध है। इस शुद्धता को बनाये रखने के लिये

शुद्धता ही चाहिये। जो आस्तिक लोग ही ला सकते है नास्तिक नही।

८६) विश्वासघाती X अविश्वासघाती

इस संसार में दो तरह के स्वभाव वाले लोग होते है। एक विश्वासघाती तो दुसरे अविश्वासघाती। हमें जिसपर विश्वास है वह हमारे विश्वास का घात भी कर सकता है। याने वह हमारे लिये वह विश्वासघाती बन सकता है। यह संसार बिना विश्वास के नहि चलाया जा सकता। हम जिस पर विश्वास रखते है वह हमारे विश्वास को बनाये भी रखता है। यह मानव के स्वभाव पर निर्भर करता है। कौनसा व्यक्ती कैसा है तथा हमे इस संसार में जिवन जिते समय फुँक-फुँक कर कदम रखना होता है। हमे कदम-कदम पर विश्वासघाती तथा अविश्वासघाती भी लोग मिलते है। जो व्यक्ती विश्वासघाती होते है वो हमेशा प्यारभरी मिठी जुबान हमारे सामने पेश करते है। उनके वचनों में बडी मिठास होती है। लेकिन उनके दिलमें विश्वासघाती का जहर होता है। जो हमे पहचानने में बहोत देर लगती है। हम पहचान भी लेते है तो बहोत देर हो जाती है। लेकिन जो व्यक्ती अविश्वासघाती होते है। उनकी जबान नाही मिठी होती है नाही पेट मे जहर होता है। किसी दुसरे व्यक्ती के लिए वे व्यक्ती सभी की भलाई ही चाहते है। तथा विश्वासघात होने से ऐसे व्यक्ती हमें बचाने की कोशिश करते जाते है।

८७) हितकारी X अहितकारी

इस संसार में हितकारी-अहितकारी दोनों प्रकार के मानव हमारे संपर्क में आने लगते है। जो हमारे हितकारी होते है वे बिना किसी उद्देश्य के हमारी मदद करते है। लेकिन जो अहितकारी होते है उनके मदद का कुछ उद्देश्य होता है। उनके उद्देश्य अलग-अलग होते है। उन्हे ऐसा लगता है की हम उनकी मदद करके हम उनपर एक प्रकार का उपकार कर रहे है। उन्होने हमारे पैरों के निचे रहना चाहिए। यदि हमारे पैरों के निचे नहि रहा तो हम उसे अपना अहितकारी रूप अवश्य दिखा देंगे। और ऐसे स्वभाव वाले व्यक्ती अहितकारी रूप दिखा ही देते है। जो व्यक्ती के हित के लिये वे दिखावा करते थे। आज वे उनके अहितकारी बन जाते है। उनसे बिना कुछ कारणवंश नफरत करते है। क्यों की उन्हे ऐसा लगता है की ये हमारे से बलशाली नही हो सकता। इसने हमारे पैरों के निचे रहना चाहिए। नहितो हम उसका अहितकारी बनकर उसका नाश कर देंगे। लेकिन नाश करनेवाला तो उपर भगवान है। जो सत्य-असत्य का फैसला सुनकर अपना फैसला करता है। हमारा ही भाग्य उपर वाले के भाग्य पर निर्भर है। तो हम कब किसके और कैसे भाग्य निर्माता बन सकते है। हमे हितकारी व्यक्ती से अहितकारी व्यक्ती मे जो परिवर्तन हुआ है वह हमारी सोच के कारण हुआ है। इसका परिणाम हमे ही भुगतना पडेगा। हम जब हितकारी से अहितकारी में परिवर्तित हो जाते है तभी हमारे विकास के रास्ते नजर ना आकर हमे दुसरो के

रास्ते काटते नजर आते है। जो हम दुसरों के सफलता के रास्ते काटने की कोशिश करते है तो हमारे सफलता के रास्ते अपने आप ही दुर जाकर उसके जिम्मेदार हम स्वयम होते है। जो हमे हितकारी से अहितकारी करके अपने आप के पैरों पर स्वयम कुल्हाडी मार देते है। अतः हमने ही सोचना है की हमें हितकारी बनना है या अहितकारी।

८८) वास्तविक X अवास्तविक

इमे कोई वस्तु वास्तविक रूप में प्राप्त होती है। तो कोई वस्तु अवास्तविक रूप में प्राप्त होती है। जैसे माता का प्यार यह वास्तविक रूप का प्यार है। लेकिन वही प्यार की झलक हम यदी नाटक, सिनेमा मे दिखाते है। तो वह अवास्तविक स्वरूप ही होता है। वह नाटक सिनेमा तक ही सिमित होती है। उसके बाद हमे वास्तविकता को अपनाना होता है। उसी तरह से हम सपना देखते है। सपने में हम वास्तविकता देखते है। अवास्तविकता के भी दर्शन हमें होते है। दोनो रूप के सपने हमे वास्तविकता-अवास्तविकता के दर्शन कराते है। हम रात में देखे सपने अवास्तविकता पूर्ण होते है। लेकिन दिन में जो सपने हम देखते है उनमें वास्तविकता होती है। जैसे राईट बंधुओं ने पंछी के समान आकाश में मानव के उडने का स्वप्न देखा । उस स्वप्न में वास्तविकता थी। तभी दोनों भाइयों ने कठिन परिस्थितीपर विजयी होकर अपने गुणों का विकास अपने सपनों को साकार

करने के लिए करने लगे। उनके स्वप्न में वास्तविकता थी। जो उन्हे विमान के आविष्कार करके सिद्ध करके दिखा दिया। हमे वास्तविकता से दुर नही भागना चाहिए। गरिबी हमारी वास्तविकता है। उसे अवास्तविकता के रूप मे नही दर्शाना चाहिए। असफलता हमारी वास्तविकता है। इसलिए इससे दुर न भागकर वास्तविकता के साथ मुकाबला करके अपने आप में हम गुणों को पूर्ण करने की कोशिश करना चाहिए। तभी तो हम असफलता से सफल मानव कहलायेंगे। हम तभी तो गरिब से अमिर बन जायेंगे। जब हम वास्तविकता के अनुसार कार्य करेंगे।

८९) समय X असमय

समय हमारे मानव के लिये कितना महत्वपूर्ण है। यह हम सभी मानव को याद है। समय के साथ हमें चलना चाहिए। यदि हमने समय के साथ नही चला तो हमारे जिवन का जितना विकास होना चाहिए। उतना नही हो पायेगा। हमे समय के साथ चलकर समय के अनुसार हमारे सामने जितने भी कार्य आते है उन्हे हँसते-हँसते स्वीकार कर लेना चाहिए। अपने सामने आने वाले कार्य को इनकार नहि करना चाहिये। चाहे वह कार्य छोटा हो या बडा हमें अपने कार्य निर्भरता से करना ही है। यह ध्येय हमें रखना चाहिए। समय यह उसका महत्व जो व्यथ्कत जान लेता है। वह अपने गुणों का विकास कार्य करके कर लेता है। उसे असमय में प्रस्तुत ना करके समय आने पर ही प्रस्तत करता है। उसे समय

के पहले असमय में अपने कार्य को प्रस्तुत करना याने तवे पर से कच्ची रोटी पकाना जैसा होता है। जिस तरह से वृक्ष से पका फल गिरने पर सभी प्राणी उस फल को खाना चाहते है। लेकिन यदी उसी वृक्ष से कच्चा फल गिरता है। तो उस कच्चे फल को कोई भी प्राणी न खाकर वह फल वैसे ही सुख जाता है। उसी तरह से मानव का संपूर्ण ज्ञान परिपूर्ण होने पर सभी उसे आत्मसात कर लेते है। लेकिन अधुरा ज्ञान कोई आत्मसात नही करता है। अतः हमे समय के साथ रहकर असमय को अपने जिवन में सुधारनाा करके निश्चीत समय का ध्येय रखना है। अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए साई के श्रद्धा और सबुरी यह दो मंत्र का उपयोग करना है।

समारोप -

मुझे नहि मालुम 'शुन्य, शिक्षणशाला, प्यार' यह पुस्तक लिखते समय एक कल्पना निर्माण हुयी। वह थी की 'अ' इस शब्द का मानव जिवन में कितना महत्व है। विरूद्धार्थी शब्द में अ लगाने पर उस शब्द का अर्थ परिवर्तन ही नही हो जाता। उसका प्रभाव भ मानव जिवन पर पडता है। यह मेरे विचार आप लोगों को समझ आ गये होंगे ऐसी मै आशा करती हु। यदी विचार प्रकट करते समय मुझसे कोई गलतियाँ हुई हुयी होगी तो कृपा करके क्षमा करेंगे। मेरी शिक्षणशास्त्र और प्यार की किताब अधुरी है। लेकिन 'अ' का मानव जिवन में महत्व यह पूर्ण होकर आपके सामने है। तथा मुझे एक नयी कल्पना यह 'प्रेरणा' के रूप मे प्राप्त हुयी है।

जिसका लेखन भी शुरू है। इस प्रेरणा में मानव के जन्म के पूर्व से तो मानव की मृत्यु तक की प्रेरणा है। जो हमारे मन को एक नयी प्रेरणा दे जायेगी। ऐसी मेरी धारणा है। यदी मुझमें कुछ गलतियां हुयी होगी तो क्षमा करे।

धन्यवाद

'कल्पना'